सत्यमेव जयते

ज्ञानवार्ता

आठवां संस्करण | अंक : 8 | वर्ष : 2017

सनासर
टयुलिप उद्यान

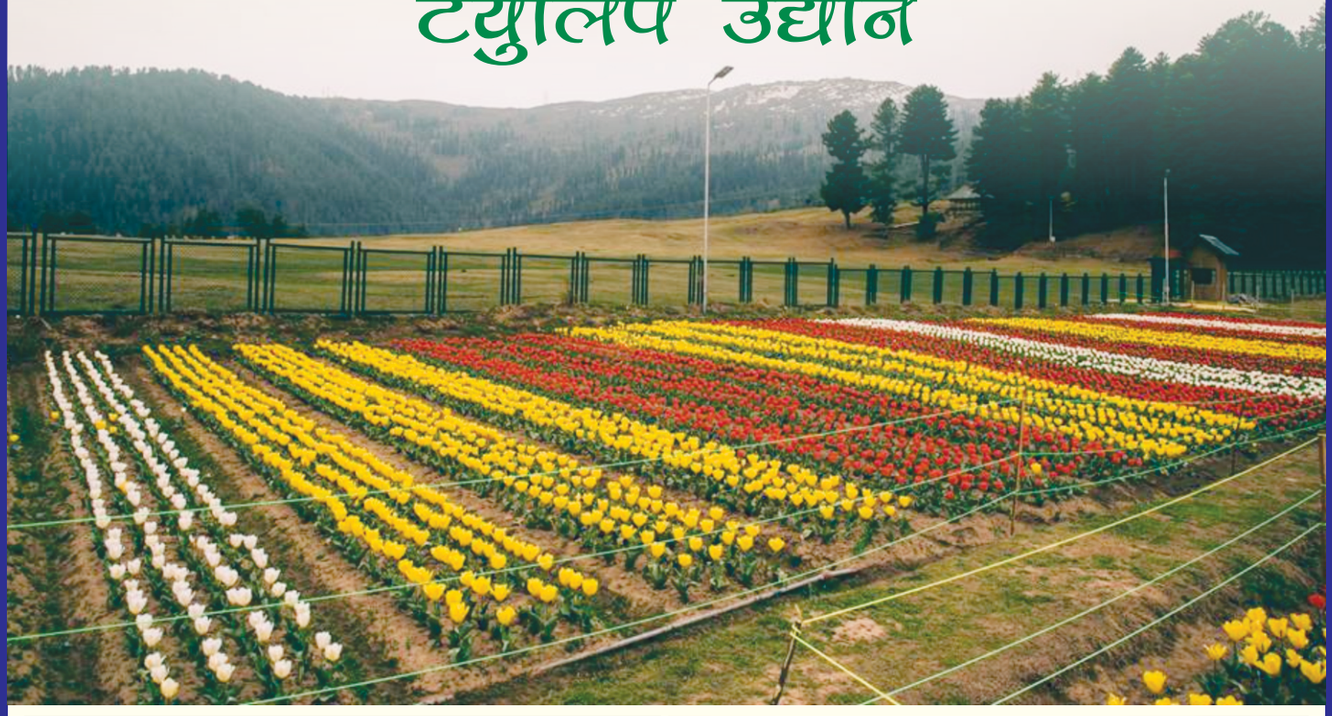

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, जम्मू

28 जून 2017 को नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, जम्मू की अर्द्धवार्षिक बैठक की गतिविधियाँ

अध्यक्षीय उद्‌बोधन .....

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति एवं निदेशक,
सीएसआईआर-भारतीय समवेत औषध संस्थान, जम्मू

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, जम्मू की वार्षिक राजभाषा गृह पत्रिका **'ज्ञानवार्ता'** के आठवें अंक के प्रकाशित होने पर मैं हर्ष का अनुभव कर रहा हूँ।

हर्ष का विषय है कि नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, जम्मू हिन्दी के उत्तरोत्तर विकास में निरंतर गतिशील है - राजभाषा हिन्दी को पूर्णतया प्रयोग में लाने हेतु हम प्रयासरत हैं। आपके सहयोग से राजभाषा हिदी में व्यापक क्रियान्वयन तथा प्रचार-प्रसार की दिशा में ज्ञानवार्ता का प्रकाशन एक अहम कदम है। ज्ञानवार्ता सदैव आशातीत भूमिका निभाती आई है और निर्बाध गति से प्रवाहमान रहने को आतुर है।

विविध भाषा-भाषी हमारे राष्ट्र की प्राचीनता, ग्रहणशीलता, अनेकता में एकता के गुणयुक्त भारतीय संस्कृति की प्रतीक हिन्दी भाषा सेतुरूप में भिन्न भाषा-भाषियों को एक सूत्र में बांधने हेतु सदैव सशक्त रही है तथा सहोदरा भाषाओं को आत्मसात् कर समृद्ध होने की सामर्थ्य केवल हिन्दी में है और बोलने तथा लिखने का साम्य हिन्दी को छोड़कर अन्य भाषाओं से कम ही है।

हिन्दी का कार्य तकनीकी दृष्टि से सम्पन्न हो- आज इसकी महती आवश्यकता है। जम्मू नगर द्वारा पर्याप्त पत्राचार ई-मेल द्वारा भी किया जा रहा है। जम्मू नराकास की वेबसाइट हिन्दी कार्यान्वयन की उपलब्धियों का ज्वलंत उदाहरण है।

लेखन शैली, कलात्मकता एवं साहित्यिक अभिरुचि को निखार देने के प्रयोजन से ज्ञानवार्ता रचनाकारों की अभिव्यक्ति का माध्यम बनी है। सदस्य कार्यालयों के विभाग-प्रमुखों से आग्रह है कि हम अपनी गृह पत्रिका का उच्च मानक स्थापित करते हुए गन्तव्य तक पहुँचने और भारत-भाल को उज्ज्वल बनाने के लिए हमें अपने में जान लानी होगी और राजभाषा के प्रति अपने गम्भीर प्रयासों को बनाए रखने की महती आवश्यकता है। नराकास (कार्यालय), जम्मू की सचिव डॉ. रमा शर्मा ने राजभाषा के कार्यान्वयन में सदैव में सक्रिय समन्वय की महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन किया है। नराकास के अध्यक्ष के नाते उनके समर्पण एवं सक्रिय सहयोग के लिए हार्दिक धन्यवाद एवं बधाई देता हूं।

राम विश्वकर्मा

(डॉ. राम विश्वकर्मा)

संपादकीय...

डॉ. रमा शर्मा
सदस्य-सचिव, नराकास, जम्मू

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, जम्मू की वार्षिक गृह पत्रिका का आठवां अंक प्रबुद्ध पाठकों को अर्पित करते हुए मुझे अत्यन्त हर्ष की अनुभूति हो रही है। वस्तुतः पत्रिका के माध्यम से सम्पादक और पाठकों में सीधा सम्पर्क हो जाता है जो दोनों और संवाद स्थापित कर गहरी आस्था को जन्म देती है यह रिश्ता निरन्तर सुदृढ़ होता चलता है। नराकास सदस्य कार्यालयों के कार्मिकों एवं विद्वत्जनों द्वारा ज्ञानवार्ता के इस अंक में महत्वपूर्ण लेखों/रचनाओं को स्थान दिया गया है। हमारे सदस्य कार्यालयों की सक्रिय भागीदारी एवं सौजन्य से यह संग्रह सुलभ हो पाया है।

अभिनव प्रयोगों द्वारा, विभिन्न कार्यक्रमों/आयोजनों से हिन्दी के प्रचार-प्रसार की दिशा में यह समिति जम्मू नगर में राजभाषा के व्यापक प्रसार में अनवरत श्रीवृद्धि कर रही है।

भारतीय संस्कृति की द्योतक हिन्दी भाषा के प्रति अपने दायित्व के निर्वहन में ज्ञानवार्ता सार्थक एवं महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगी - ऐसा मेरा विश्वास है। रचनाकारों के रचनाकौशल एवं सृजनात्मकता के सहयोग से ही यह अष्टम अंक आप तक पहुंचा पाने में सफल हुए हैं।

अन्त में, प्रबुद्ध पाठकों से मेरा विनम्र आग्रह रहेगा कि अपने सुझाव अवश्य भेजें ताकि पत्रिका का परिष्कार सम्भव हो पाए। निष्णात मनीषी अध्यक्ष महोदय के स्नेहिल और कुशल नेतृत्व के लिए नत होती हुई मैं लेखों के चयन, संशोधन एवं गुणवत्ता प्रदान करने वाले सम्पादक मंडल के प्रति अपनी कृतज्ञता व्यक्त करते हुए अपने टंकण सहयोगी श्री राजेश कुमार के प्रति भी आभार प्रकट करती हूँ ।

रमा शर्मा

(डॉ. रमा शर्मा)
सदस्य-सचिव, नराकास, जम्मू

राजभाषा अधिनियम, 1963 की धारा 3(3) के अंतर्गत जारी होने वाले कागज़ात

1.	सामान्य आदेश	General orders
2.	ज्ञापन	Memorandum
3.	अधिसूचनाएं	Notifications
4.	संकल्प	Resolution
5.	नियम	Rules
6.	करार	Agreement
7.	संविदा	Contract
8.	निविदा सूचना	Tender Notice
9.	अनुज्ञप्ति	Licence
10.	अनुज्ञापत्र	Permit
11.	सूचना	Notice
12.	प्रशासनिक और अन्य प्रतिवेदन	Administrative and other reports
13.	प्रेस विज्ञाप्ति	Press Communique
14.	संसद के किसी सदन या सदनों के समक्ष रखे गए प्रशासनिक तथा अन्य प्रतिवेदन और राजकीय कागज़ात	Administrative and other reports and official papers laid before a House or Houses of Parliament.

राजभाषा हिन्दी संबंधी महत्वपूर्ण जानकारी

1. चौदह सितम्बर उन्नीस सौ उनचास (14.09.1949) को देवनागरी लिपि में हिन्दी को संघ की राजभाषा के रूप में अपनाया गया।
2. भारत के संविधान के अनुच्छेद 343 से 351 तक राजभाषा से संबंधित व्यवस्था दी गई है।
3. राजभाषा अधिनियम 1963 में पारित किया गया ।
4. संघ के शासकीय प्रयोजनों में देवनागरी के प्रयोग के लिए भारत सरकार ने 1976 में राजभाषा नियम 1976 पारित किया।
5. राजभाषा नियम के अनुसार राजभाषा हिन्दी संबंधी उपबंधों के अधीन जारी निर्देशों के अनुपालन का दायित्व प्रशासनिक प्रधान या कार्यालय प्रमुख का होता है।
6. राजभाषा के संबंध में संसदीय समिति का गठन संघ द्वारा किया जा सकता है।
7. संसदीय समिति में लोकसभा के 20 तथा राज्य सभा के 10 सदस्य सम्मिलित होंगे।
8. संविधान के अनुच्छेद 348(1) के अंतर्गत सर्वोच्च न्यायालय तथा न्यायालय में कार्यवाही अंग्रेजी में की जाएगी।
9. राजभाषा अधिनियम में केवल 9 धारा ही है।
10. राजभाषा नियमावली 1976 में केवल 12 पैरा है।
11. राजभाषा विभाग गृह मंत्रालय के अधीन है।
12. राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक वर्ष में चार बार आयोजित की जाती है।
13. नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक वर्ष में दो बार आयोजित की जाती है।
14. वर्तमान वार्षिक कार्यक्रम के अनुसार 30 प्रतिशत टिप्पण हिन्दी में किया जाना है।
15. भारतीय रिज़र्व बैंक के गवर्नर नोटों पर हिन्दी में अपना हस्ताक्षर करते हैं।
16. उच्चस्तरीय सरकारी बैठकों के कार्यवृत्त, कार्यसूची, कार्यक्रम आदि द्विभाषी में तैयार किए जाने है।
17. सभी परिपत्र द्विभाषी में जारी करना अनिवार्य है।
18. कंप्यूटर में अंग्रेजी से हिन्दी में अनुवाद करने के लिए सहायक सॉफ्टेवयर का नाम है मंत्रा।

वर्ष : नवम्बर, 2017 अंक : आठवां वार्षिक गृह पत्रिका

संरक्षक

डॉ. राम विश्वकर्मा
निदेशक आइ.आइ.आइ.एम. व
अध्यक्ष, नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, जम्मू

प्रधान संपादक

डॉ. रमा शर्मा
हिन्दी अधिकारी एवं सचिव,
नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, जम्मू

संपादक मंडल

1. श्री अब्दुल रहीम
2. श्री पंकज बहादुर
3. श्री जगदीश लाल
4. श्री जॉनसन गिल
5. श्री वीरेन्द्र सिंह
6. श्री फूल सिंह

सहयोग

श्री राजेश कुमार (कंप्यूटर/हिन्दी टंकक)

नोट:

इस पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं में व्यक्त विचार एवं दृष्टिकोण संबंधित लेखको के हैं। नराकास जम्मू व संपादक मंडल का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है।

संयोजक संपर्कसूत्र : नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, जम्मू
सी.एस.आई.आर.–भारतीय समवेत औषध संस्थान
(वैज्ञानिक तथा औद्योगिक अनुसंधान परिषद्)
नहर मार्ग, जम्मू तवी–180 001 (भारत)
दूरभाष : 0191–2585006–13 फैक्स : 0191–2586333
E-mail : ramasharma@iiim.ac.in; website : www.tolicjammu.org
नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, जम्मू

अनुक्रमणिका

क्र.	नाम	लेखक/लेखिका	पृष्ठ
1	^^y?kq chtk.kq lxzo/kZu }kjk vxzf.kr ikni mRiknu**	;nquUnu lqu	1
2	^fgUnh esa foKkuy{[ku vkSj rduhdh 'kCn&fuekZ.k**	Mk- jek 'kekZ	6
3-	^^ukjh lqj{kk**	vkj-dh-,y- d.kZ	10
4-	^^'kkfnh dk fuea=.k**	,l- dkyxkodj	12
5-	^tqBk [kkuk**	,l- dkyxkodj	12
6-	^^esjh dkbZ tk;nkn ugha**	lquhrk dqekjh	13
7-	^^'kCn lsokjs ckfy,**	iznhiu 'kekZ	14
8-	ykgkSMh & MkWxj dk ,d lkLd`frd iofZ	Mk- jek 'kekZ	16
9-	,d l;kjh lh dfork oDr ij	lquhrk dqekjh	20
10-	'khjkt-k if=dk] ,dkdh fo'k"kkad ds -------	lq'khy dqekj	21
11-	70 o"kZ ckn ds tEew&d'ehj dk lkEiznkf;d pgjk vkSj fnukad&fnu curs vuqdwy ikfdLrku % ,d fpUru	jfo dqekj	28
12-	vk;qosZn esa jkxksa dh ljy funku i)fr vkSj oukSf"k/k;ksa ls mudk mipkj	Mk- jek 'kekZ	32
13-	oSfnd lkfgR; esa ekuoh; eY;	Mk- izfrHkk	34

''लघु बीजाणु संवर्धन द्वारा अगुणित पादप उत्पादन''

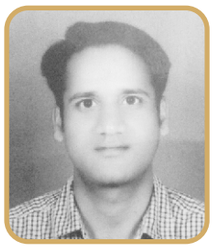

आवृतबीजी अर्थात् फल एवं पुष्पधारी पादप धरती पर उगने वाले सबसे विविध और आर्थिक रूप से महत्वपूर्ण पादप हैं जिनकी विश्वव्यापी लगभग 3,50,000 प्रजातियाँ हैं। ये पादप आधारित सामग्रियों यथा भोजन, रेशे, दवाएं, आभूषण इत्यादि के महत्वपूर्ण स्रोत हैं। अगुणित (हेप्लॉइड) पादप ऐसे पादप हैं जिनमें गुणसूत्र संख्या युग्मकीय (द) होती है, जबकि द्विअगुणित (डाई हेप्लॉइड) ऐसे अगुणित पादप हैं जिनमें गुणसूत्रों का द्विगुणन हो जाता है। अगुणित पादपों का पात्रे (इन विट्रो) संवर्धन प्रजनन चक्र की समयावधि को कम करने एवं उनकी समयुग्मज अवस्था में वांछनीय गुणों जैसे रोग प्रतिरोध के अप्रभावी जीन और उपज के प्रभावी जीन इत्यादि को ठीक करने का एक अवसर प्रदान करता है। आर्थिक रूप से महत्वपूर्ण फसलें जैसे जौ, कपास, कॉफी, मक्का, चावल, सरसों, सूरजमुखी, गेहूँ के द्विअगुणित प्रकार (वेरिएन्ट्स) जिन्हें अगुणित संवर्धन द्वारा विकसित किया गया है, सर्वाधिक वांछनीय है, इनका उपयोग आधुनिक फसल प्रजनन कार्यक्रमों में किया जा रहा है। 'पुंजनन', नर युग्मकी कोशिकाओं के प्रेरण व संपोषण द्वारा अगुणित एवं द्विअगुणित बनने की प्रक्रिया है अर्थात् पराग कणों से भ्रूणाभ (अगुणित भ्रूण) के विकास को पुंजनन कहते हैं।

लघु बीजाणु संवर्धनः-

बड़ी संख्या में उन्नत द्विअगुणित किस्मों को उनके उत्कृष्ट कृषिगत विशेषताओं के साथ सूचित किया गया है। सर्वप्रथम हेबरलान्ट (1902) ने उत्तक संवर्धन तकनीक द्वारा एक बीजपत्री पादपों को प्राप्त करने का प्रयास किया किन्तु वह अपने प्रयास में असफल रहा। गुहा एवं माहेश्वरी (1964) ने परागकोष संवर्धन तकनीक द्वारा सर्वप्रथम अगुणित पादप प्राप्त किये। मूलरूप से पुंजनन से तात्पर्य लघुबीजाणुओं को प्रवृत्त कर अगुणित पादपों में विकसित करना है जिसमें लघु बीजाणुओं को अपने सामान्य परागीय परिवर्धन से भिन्न भ्रूणीय परिपथ पर ले जाया जाता है। इन विट्रो पुंजनन में अगुणित पादपों का निर्माण कायिक भ्रूणोद्भव अथवा कैलस निर्माण द्वारा होता है। पुंजनीय विकास को मुख्यतः तीन अभिलक्षणीय प्रवस्था में विभाजित किया जा सकता है।

(अ) भ्रूणजन्य क्षमता का अधिग्रहण

(आ) कोशिकीय विभाजनों का प्रवर्तन

(इ) प्रारूप गठन

ऐसे पादप जिनमें अगुणिता का उपयोग प्रजनन प्रयोजनों के लिए किया गया है उनमें अनाज की

फसलें, रेशे, चारा, तम्बाकू, सूरजमुखी आदि उदाहरण मुख्य हैं। अगुणित एवं द्विअगुणित पादपों को प्राप्त करने के कई तरीकों में से लघु बीजाणु संवर्धन सबसे प्रभावी और व्यापक रूप से उपयोग की जाने वाली विधि है। लघु बीजाणु सामान्य रूप से नर युग्मकोद्भिद बनने के लिए पूर्वनिर्दिष्ट होते हैं, परन्तु संवर्धन माध्यम में ये पूर्तिजीवी तरीके से बढ़ने लगते हैं। धतूरा के परागकोश संवर्धन के सफल प्रयोगात्मक अगुणित उत्पादन के बाद कई आर्थिक रूप से महत्वपूर्ण प्रजातियों को अगुणित एवं द्विअगुणित पौधों के रूप में विकसित किया गया है। परागीय पुंजनन के द्वारा प्राप्त पौधे कॉल्चिसिन की अनुपस्थिति में भी भिन्न-भिन्न सूत्रगुणिता प्रदर्शित करते हैं। अगुणित से द्विगुणित होने की आवृत्ति विभिन्न फसलों में भिन्न-भिन्न हो सकती है। सर्वाधिक द्विगुणिता दर 87 प्रतिशत जौ में दर्ज की गई इसके बाद चावल में 72 प्रतिशत देखी गई ।

पादपों को पुष्पन क्रिया से पहले दिया गया न्यून तापक्रम परागकणों के भ्रूणीय परिवर्धन की आवृत्ति को बढ़ाता है। यह भी संभव है कि लघु बीजाणुओं का पुंजनीय (युग्मकोद्भिद) या भ्रूणीय (बीजाणुद्भिद) परागकणों में निर्धारण जीनों की क्रियाशीलता में भिन्नता के कारण हो। पुंजनन के लिए सबसे उपयुक्त चरण है एकल केन्द्रकीय अवस्था के तुरन्त बाद लघुबीजाणु जनन। लघुबीजाणुओं का पुंजनीय अगुणितों में परिवर्धन यहां वर्णित चार तरीकों में से किसी भी एक के द्वारा हो सकता है। पहली विधि में लघुबीजाणु दो समान पुत्री कोशिकाओं में विभाजित होता है। ये दोनों ही पुत्री कोशिकायें पुंजनीय अगुणितों के परिवर्धन में योगदान दे सकती हैं। उदाहरण डाटूरा इनोक्सिया (धतूरा)। दूसरी विधि में एकल केन्द्रकीय लघुबीजाणु में कोशिका विभाजन असामान्य होता है। जिसके परिणामस्वरूप एक बड़ी कायिका और छोटी जनन कोशिका का निर्माण होता है। पुंजनीय अणुणित का निर्माण कायिक कोशिका से होता है जबकि जनन कोशिका का ह्रास हो जाता है। उदाहरण तम्बाकू। एकलकेन्द्रकीय पराग कोशिका में तीसरी विधि के अन्तर्गत असमान विभाजन होता है और एक बड़ी कायिका कोशिका एवं छोटी जनन कोशिका का निर्माण होता है। जिसमें से केवल जनन कोशिका ही पुंजनीय अगुणित में परिवर्धित होती है। जैसे-हायोसायेमस नाइगर।

चतुर्थ विविध से एकल केन्द्रकीय लघुबीजाणु असमान विभाजित होकर जनन एवं कायिका कोशिका बनाते हैं। दोनों प्रकार की कोशिकायें लगातार विभाजित होकर पुंजनीय अगुणित बनाती हैं। जैसे डाटूरा मेटल। भ्रूणाभ परिवर्धन उपर्युक्त चार में से किसी भी प्रक्रिया से हो बहुकोशिकीय संरचना बन जाने पर यह बाहरी भित्ति को भेदती हुई बाहर निकल आती है। यह कोशिका संहति एक गोलाकार भ्रूण की आकृति ले लेती है। इसके बाद पश्चगोलीय भ्रूण जनन की विभिन्न अवस्थाओं से होते हुए एक पूर्ण विकसित पादप का निर्माण होता है।

पराग-संवर्धन प्रोटोकॉल

सर्वप्रथम पुष्प कलिकाओं को एकत्र किया जाता है। इन कलिकाओं में परागकण द्विकोशिकीय चरण में होने चाहिए।

(क) संवर्धन प्रक्रिया आरम्भ करने से पूर्व इन्हें अतिशीत तापक्रम पर उपचारित किया जाता है।

(ख) कलिकाओं को उपयुक्त रसायन (NaOCl or HgCl2) द्वारा अजर्मीकृत किया जाता है।

(ग) कलिकाओं को लेमिनार एयर फ्लो चेम्बर में 3-4 बार दोहरे आसुत जल से धोया जाता है।

(घ) पुष्प कलिका से परागकोशों को अलग कर अजर्मीकृत तरल माध्यम युक्त बीकर में एकत्र कर लिया जाता है।

(ड़) परागकोशों को काँच की छड़ से दबाया जाता है जिससे की लघुबीजाणु बाहर निकल सकें।

(च) परागकोश और लघुबीजाणु युक्त इस तरल माध्यम को नायलॉन छलनी द्वारा छान लिया जाता है जिसमें से लघुबीजाणु ही निकल पाते हैं।

(छ) छनित्र को 500-800 आर.पी.एम. पर 5 मिनट के लिए सेन्ट्रीफ्यूज किया जाता है।

(ज) अनावश्यक हिस्सों को हटाने के पश्चात् शेष हिस्से को सूक्रोज विलियन (30 प्रतिशत या 55 प्रतिशत परकोल व 4 प्रतिशत सूक्रोज) पर स्तरित कर 1200 आर.पी.एम. पर 5 मिनट के लिए सेन्ट्रीफ्यूज करते हैं।

(झ) इसके बाद बनी पेलेट को नये माध्यम से घोल लिया जाता है।

(ञ) लघुबीजाणुओं को 250 डिग्री सेंटीग्रेड पर 16:8 घंटे की प्रकाशीय अवधि के लिए तरल अथवा ठोस माध्यम पर संरोपित कर दिया जाता है।

(ट) लघुबीजाणु 15-20 दिनों की अवधि में सीधे भ्रूणाभ में विकसित हो जाते हैं।

(ठ) लघुबीजाणु संवर्धन में स्वत: दोहरे अगुणित (एस.डी.एच.) भी प्राप्त होते हैं।

(ड) चूंकि द्विअगुणित स्वाभाविक रूप से उपलब्ध होते हैं इसलिए कॉल्चिसिन उपचार की आवश्यकता नहीं होती है।

(ढ) स्वत: दोहरे अगुणितों की आवृत्ति बढ़ाने की आवश्यकता है जिससे इनकी संख्या में वृद्धि हो सके और क्षेत्र परीक्षण किया जा सके।

पराग दाता:

पुंजनन को निर्धारित करने वाले दो महत्वपूर्ण कारक है- पादप का प्रकार और उसका जीनोटाइप जो

लघुबीजाणुजनन के समय और बनने वाले लघुबीजाणुओं की मात्रा को प्रभावित करते हैं। अधिकांश संवर्धन में परागकोशीय भित्ति के अर्न्तजात में उपस्थित ग्लूटामाइन और सेरीन की अधिक मात्रा परागीय भ्रूण परिवर्धन में सहायक होती है। यह पाया गया है कि परागकोश भित्ति में परागीय भ्रूणाभ के निर्माण के लिए लघुबीजाणुओं का तात्कालिक प्रेरण, नियंत्रित प्रकाश, तापमान और नमी की अनुकूल दशा पादप के विकास को सक्षम बनाती है। पुंजनन के द्वारा रोग प्रतिरोधी एवं कीट मुक्त अनाज की फसलों को प्राप्त करने की सफलता की दर उच्च है।

संवर्धन तकनीक

कुछ दशाओं में पूर्व उपचार जैसे कम या उच्च तापमान, पोषक माध्यम में शर्करा का कम स्तर, खाद्य प्रतिबंध, परासरणी तनाव, उष्मा आघात एवं खाद्य प्रतिबंध का संयोजन, कॉल्चिसिन का प्रयोग, ऑक्सिन और गामा विकिरण आदि पुंजनन को शुरू करने के लिए आवश्यक है। संवर्धन माध्यम केवल पोषण ही प्रदान नहीं करता अपितु आगे के परिवर्धन के लिए दिशा निर्देश भी देता है। सर्वाधिक प्रयोग किये जाने वाले माध्यम है N6 एवं मूराशिगे एवं स्कूग संवर्धन माध्यम ।इन पोषक माध्यमों के घटकों में बदलाव करने से लघुबीजाणुओं के युग्मकोद्भिद, कैलस या भ्रूणाभ में परिवर्तन को प्रेरित किया जा सकता है। यह पाया गया है कि पी.एच. और पोषक तत्वों की सान्द्रता के संतुलन द्वारा पुंजनन को प्रेरित, अनुरक्षित एवं संपोषित किया जा सकता है। ब्रेसिका नाइग्रा में 2.0–2. 5 मि.मी. आकार की कलिका पूर्णशक्तता और लघुबीजाणु भ्रूणोद्भव हेतु इष्टतम् है। बोरेज ऑफिसिनेलिस एक ओषधीय पादप है, इसमें पाया गया है कि 5–7 मि.मी. लम्बी पुष्प कलिका को चार दिन तक शीतोपचार, 3 दिन उष्णीय आघात देने के पश्चात् संवर्धन माध्यम (3 प्रतिशत माल्टोज, 2 मिग्रा/ली 2,4–D और 1 मिग्रा/ली BAP) में संरोपित करने पर लघुबीजाणु संवर्धन द्वारा अगुणित भ्रूणाभ प्राप्त किये जा सकते हैं।

संवर्धन माध्यम में लघुबीजाणुओं के संवर्धन की चार प्रमुख विधियां हैं।

अ) पुष्प जिनके परागकोष में एकल केन्द्रकीय लघुबीजाणु हो ऐसे पुष्पक्रमों को संवर्धन माध्यम पर संरोपित किया जाता है।

आ) एकल केन्द्रकीय लघुबीजाणु युक्त परागकोश को पुष्प से अलग निकाल कर संवर्धन माध्यम में संरोपित किया जाता है।

इ) लघुबीजाणुओं को परागकोष से निकालकर उनके प्रोटोप्लास्ट को ठोस संवर्धन माध्यम पर संरोपित करते हैं।

ई) केवल परागकोश को संवर्धन माध्यम की सतह पर रखा जाता है।

अगुणित विविधता:

पुंजनन द्वारा दोहरे अगुणितों का निर्माण, संकर बीज उत्पादन एवं आनुवांशिक विविधता मूल्यांकन दोनों के लिए एक सशक्त तकनीक प्रस्तुत करता है। यद्यपि पुंजनन कुछ प्रजातियों में स्वाभाविक रूप से होने वाली प्रक्रिया है पर आवृत्ति में बहुत न्यून है। प्रभावी पुंजनन कलिका, परागकोष, विलगित लघुबीजाणुओं के प्रेरण द्वारा पात्रे (इन विट्रो) तकनीक से किया जा सकता है। पुंजनन का इन विट्रो भ्रूण जनन तंत्र, भ्रूण जनन के प्रेरण और अगुणित लघुबीजाणु से भ्रूण निर्माण में होने वाले विकास के अध्ययन के संदर्भ में एक आदर्श प्रणाली है। बादाम (प्रूनस डल्सिस) में परागकोश संवर्धन द्वारा भ्रूणजनन किया गया था। जैसा कि कई प्रयोगों में दर्शाया गया है पुंजनन के दौरान भ्रूणीय परिवर्धन को तीन मुख्य अतिव्यापी चरणों में बाँटा गया है। प्रथम चरण में तनाव द्वारा भ्रूणजन्य क्षमता का अभिग्रहण जिसमें युग्मकोद्भिद विकास का दमन और कोशिकीय निर्विभेदन को अग्रसर करना शामिल है। द्वितीय चरण में कोशिकीय विभाजनों द्वारा बाहरी भित्ति में निहित बहुकोशिकीय संरचना का निर्माण होता है। तीसरे चरण में भ्रूण-सदृश संरचना बाहरी भित्ति से बाहर निकलती है और प्रारूप गठन होता है।

अगुणितों के लाभ:

(अ) अगुणित पादप निर्माण, एक स्वाभाविक होने वाली प्रक्रिया है जो कि पुंजनन के द्वारा प्राप्त की जा सकती है।

(आ) पुंजनन की तकनीक काफी सरल है।

(इ) अगुणितों में प्रत्येक जीन का सिर्फ एक ही एलील होता है।

(ई) कोई भी प्रभावी उत्परिवर्तन या लक्षण तुरंत दिखाई देता है।

(उ) घातक जीन वाले पादप जीन पूल से समाप्त हो जाते हैं।

(ऊ) शुद्ध समयुग्मजी द्विगुणित एवं समयुग्मजी बहुगुणित पादप प्राप्त किये जा सकते है।

(ए) द्विअगुणितों द्वारा किसी भी अवशिष्ट विषमता की समस्या को हल किया जा सकता है।

(ऐ) द्विगुणन या तो स्वत: या फिर कॉल्चिसिन द्वारा किया जा सकता है।

(ओ) अगुणित प्रोटोप्लास्ट का ट्रांसफॉरमेशन कम समय में होता है।

(औ) पात्रे परागकोश संवर्धन सब्जी एवं अनाज की फसल सुधार में उपयोगी है।

यदुनन्दन सेन
तकनीकी सहायक, पादप विज्ञान विभाग,
भारतीय समवेत औषध संस्थान, जम्मू

'हिन्दी में विज्ञानलेखन और तकनीकी शब्द-निर्माण'

सैद्धान्तिक या व्याख्यात्मक ज्ञान के प्रायोगिक पक्ष अर्थात् विशिष्ट ज्ञान की व्यापक संकल्पना को रचनात्मक अभिव्यक्ति देना ही वस्तुतः विज्ञानलेखन है। सम्पूर्ण ज्ञान के मूल वेदों को समस्त संसार में विज्ञान का आधारग्रंथ माना जाता है। ऋषि-मुनियों के रूप में विख्यात वाग्भट्ट, चरक, सूश्रुत, कश्यप, आर्यभट्ट और वराहमिहिर आदि विषयों के विशेषज्ञ ही नहीं उस समय के वैज्ञानिक थे, चिकित्सक थे। इस वास्तविकता को प्रामाणिक बनाते हमारे प्राचीनग्रंथ हमारी सभ्यता का वैज्ञानिक तंत्र पर आधारित होने के तथ्य की पुष्टि करते हैं।

चूंकि विज्ञान, नवीन खोजों की एक सतत वैश्विक प्रक्रिया है जिसमें अलग-अलग आविष्कार अलग-अलग लोगों द्वारा संपादित होता है। वैज्ञानिकों द्वारा कल्पनाशील विचाराणाओं के प्रवाह को प्रायोगिकता की कसौटी पर कसने के बाद उसे सिद्ध करने तथा सम्पूर्ण विश्व को अपने नवीन अन्वेषण से भिज्ञ करवाने के लिए जिस माध्यम का सहारा लिया जाता है वह माध्यम भाषा है। अब प्रश्न उठता है कि वैज्ञानिक अभिव्यक्ति का माध्यम क्या होना चाहिए और अन्ततः भारतीय परिवेश में वैज्ञानिक अभिव्यक्ति की सार्थकता और उद्देश्य क्या है तथा यह कितना व्यावहारिक है? विज्ञान को सर्वसाधारण तक पहुंचाना और यह कार्य जनसाधारण की भाषा से अधिक सरलता से अन्य किसी भाषा से नहीं किया जा सकता और विज्ञान एक ऐसा विषय है तो हरेक व्यकित के जीवन से किसी न किसी रूप में अवश्य जुड़ा हुआ है। विज्ञान-नीति का यह लक्ष्य होता है कि वैज्ञानिक ज्ञान व तकनीकी जानकारी द्वारा अर्जित लाभों को देश की आम जनता को पहुंचाया जाए। विश्व के सभी देशों में विज्ञान की अभिव्यक्ति अपनी भाषाओं में होती है, जापान, चीन, रूस, जर्मनी, फ्रांस, इटली, इस्राइल व अमेरिका जैसे देश इसका उदाहरण है। विज्ञान की अभिव्यक्ति अनुवाद पर निर्भर है और इस क्षेत्र में अनुवाद अतिरिक्त कटिबद्धता और परिश्रम मांगता है। वैज्ञानिक साहित्य में हिन्दी अनुवाद की समस्याएं या हिन्दी में विज्ञालेखन की समस्याएं समानान्तर चलती दिखाई देती है।

अनुवाद एक जटिल प्रक्रिया है। इसका सटीक और वास्तविक रूपान्तरण तभी संभव है जब रचनाकार की पृष्ठभूमि वैज्ञानिक हो तथा स्रोत और लक्ष्य दोनों भाषाओं पर उसका समान अधिकार हो ताकि वह वैज्ञानिक जथ्यों को सही परिप्रेक्ष्य में देख सके, आत्मसात कर सके और भारतीय परिस्थतियों और आवश्यकताओं के अनुरूप ढाल सके। हिन्दी में विज्ञान सम्पादित करने में सबसे बड़ी बाधा विज्ञान-संबंधी उस अंग्रेजी शब्दावली की है जिनके भाषायी पर्याय नहीं मिलते और विशेषरूप से उन शब्दों के पर्याय खोजना कठिन ही नहीं असंभव हो जाता है जिनकी उत्पत्ति किसी आविष्कारक या प्रयोगकर्त्ता के नाम से हुई हो जैसे लुईपास्चर के नाम से 'पास्चराइज़ेशन' 'रमनइफेक्ट' सी.वी.रमण के नाम से और न्यूटन्स इफेक्ट न्यूटन के नाम से। अंग्रेजी के शब्दों में भी बहुत से शब्द ग्रीक, लेटिन व फ्रेंच मूल के होते हैं। इन शब्दों के हिन्दी पर्याय स्रोतभाषा तक पहुंचे

बिना गढ़ना बहुत दुष्कर कार्य है। कुछ वैज्ञानिक शब्द हिन्दी में अपने पूर्ण अर्थ का द्योतन नहीं करते जैसे अंगेजी का Monsoon शब्द है ऋतु या मौसम इसके लिए पूर्ण पर्याय नहीं है। Hygiene शब्द है स्वच्छता इसके लिए सही पर्याय नहीं है। विटामिन, कैलोरी, मलेरिया जैसे चिकित्सा-विज्ञान संबंधी सैंकड़ों शब्द हिन्दी में अपना लिए गए हैं। अतः जबरदस्ती उनके पर्याय गढ़ने से अच्छा है उन्हें ज्यों का त्यों अपना लिया जाए।

भारत में हिन्दी में विज्ञानलेखन की एक शताब्दी से भी पर्याप्त पहले ही सुदीर्घ परम्परा है। किंचित् अतिरिक्त परिश्रम से अंग्रेजी सन्दर्भसाहित्य का प्रयोग हिन्दी में विज्ञानलेखन को बल दे सकता है। शब्दावली के क्षेत्र में वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग द्वारा विज्ञान के लगभग प्रत्येक विषय पर अखिल भारतीय शब्दावलियों का प्रकाशन किया गया है। पारिभाषिक शब्दावली में संकल्पना पहले बाहर से ली हुई होती है, जन्मदाता नामकरण करता है और प्रयोगकर्ता पत्र या किताब में लिखे शब्द का प्रयोग शुरू कर देता है जैसे माऊस, फ्लॉपी वगैरा। मौलिक अन्वेषक उसे जो नाम देता है वही स्वीकृत हो जाता है।

यातायात, परिवहन जैसे शब्द प्रयोग में आने से परिचित होकर सरल लगने लगे। तकनीकी पर्यायों को खोजना होता है शब्द का निर्माण नहीं करना होता। शब्द तो पहले से हमारे पास है भाषा नियोजन पहला पड़ाव है शब्दावली निर्माण का विज्ञान की संकल्पनाओं के लिए पारिभाषिक शब्द विकसित करना सबसे बड़ी समस्या है। कोशगत अर्थ अपनी विशिष्ट भंगिमा लिए रहता है फिर कोश में उपलब्ध शब्दों की पूँजी से यहां काम नहीं चलता नए शब्द गढ़ने पड़ते हैं। कई स्थलों पर परपंरा के शब्दों को अर्थ का नया संस्कार देना पड़ता है। रामायण में विमान अथवा-पुष्पकविमान का प्रकरण सर्वविदित है। बाद में विज्ञान की संकल्पना Aircraft के 'विमान' को लिया गया जिससे गढ़े गए पारिभाषिक शब्द इस प्रकार हैं:-

(1) Aeronautical Development - वैमानिकी विकास

(2) Department of Aeronautics - वैमानिकी विभाग

(3) Civil Aviation - नागर विमान

अंग्रेजी शब्द Monsoon जिसे हिन्दी में मानसून ही लिखते हैं, वस्तुतः मौसम का परिवर्तित रूप है। कोश में ऋतु और मौसम अंग्रेजी के Season का पर्याय है किन्तु मानसून वर्षा की स्थिति से, समुद्र से चलने वाली हवा की परिस्थितियों से संबद्ध है। विज्ञान संबंधी लेखन में अर्थ की भिन्न तथा आपवादिक स्थितियां होती है। इसलिए विज्ञान के पारिभाषिक शब्दों के अपने मायने होते हैं अपने संदर्भ होते हैं। हिन्दी में विष और ज़हर हैं, जबकि अंग्रेजी में Poison, Toxin और Venom है और इनके अपने सुनिश्चित अर्थ संदर्भ हैं जिन्हें हिन्दी में रूपांतरित करते हुए ये पर्याय बनाए गए हैं।

Poison - विष

Toxin - आविष Toxic - आविषी

Venom – जीविष अर्थात् जीव + विष,

जिस पकार जीव + विष को जीविष किया गया है इसी प्रकार खरीददारी से खरीदारी शब्द बन गए हैं। ये लोपीकरण से बने हुए पर्याय है।

This durg though derived from venom is not poisonous but toxic & toxicity depends on person to person.

Toxin एक रासायनिक नाम है जो नशा उत्पन्न करते हैं, जैसेकि चाय अथवा कॉफी में Toxin होता है, सांप और बिच्छू जैसे जीवों में प्राप्त ज़हर Venom है, इसे जैव विष कह सकते हैं, जीव + विष या जैव विष वैज्ञानिक लेखन में अनुवाद की भूमिका भाषा को आधुनिक और अर्थसक्षम बनाने से जुड़ी हुई है। अंग्रेजी Geometry के लिए हिन्दी में ज्यामिति अथवा रेखागणित पारिभाषिक शब्द है। ग्रीक शब्द Geo का अर्थ पृथिवी और Metron का अर्थ है मापन। अत: Geometry का पर्याय अपनी पंरपरागत संकल्पना का नवीन अर्थ में प्रयोग के आधार पर है। किन्तु Geology और Geography के लिए प्रचलित हिन्दी पर्याय भू-विज्ञान तथा भूगोल में Geo का मूल अर्थ अर्थात् – भू अथवा भूमि सक्रिय है। अंग्रेजी Hyper से अनेक संयुक्त शब्द बने हैं। जब उनका हिन्दी पर्याय बनाते है तो कभी 'उच्च' और कभी 'अति' का सहायता लेनी पड़ती है, जैसे –

Hypertension	– उच्च रक्तचाप
Hypersthesia	– अति संवेदिता
Hyperbolic expression	– अतिशयोक्तिपूर्ण अभिव्यक्ति

इससे स्पष्ट है कि वैज्ञानिक और तकनीकी क्षेत्र में संबंधित पारिभाषिक शब्दों का निर्माण अध्ययन और सृजन का मौलिक क्षेत्र है जिसके लिए व्यक्ति को विज्ञान और भाषा का अधिकारी होना चाहिए जोकि प्राय: अत्यंत कठिन होता है। हर देश वैज्ञानिक संकल्पनाओं की व्याख्या अपनी भाषाई परंपरा में करता है और उसका लक्ष्य विषय को बोधगम्य बनाना होता है। ध्वनि भाषा की मूल आधार है और अनन्त ध्वनियों के कारण भी भाषा की स्पष्टता में बाधा आती है। विस्तार और प्रसार के कारण हिन्दी में एक-एक वर्ण के दो-दो रूप प्रचलित हैं जिस कारण मौलिक और लिखित रूपों में अनेकरूपता आने लगी है और इस प्रकार के प्रयोग से भेद-भ्रम उत्पन्न होते हैं। एकरूपता और मानकता तो विज्ञानलेखन का अनिवार्य अंग है। उच्चारणभेद के कारण आंचलिक शब्द लेने से भी शब्दावली के निर्माण में दुरूहता बढ़ेगी अत: स्रोतभाषा के मूल तक गवेषणा के उपरान्त ही व्युत्पत्ति, विकास, अर्थ और रूप-विचार के आधार पर सर्वाधिक समकक्ष और समीपस्थ शब्द लिया जा सकता है। इसका सरल उपाय यह है कि लोकप्रिय और सर्वमान्य शब्दों के प्रयोग की छूट हो और जिन शब्दों का विरोध न हो अर्थात् कुर्सी को मेज न कहा गया हो । कहने का तात्पर्य यह है कि मीन-मेख न निकालकर एक स्वस्थ दृष्टिकोण अपना लिया जाए जैसे 'मेटाडोर' मिनी बस बनाने वाली एक कम्पनी का नाम है परन्तु उस मिनी बस को मेटाडोर कहा जाता हे और हर लोहे की

अल्मारी को गोदरेज की अलमारी बोला जाता है यानि विरोध कोई नहीं है और सम्प्रेषण भी अपनी भाषा में हो गया। अनुवाद भाषा का हो सकता है संस्कृतियों का नहीं।

लोकभाषा के प्रचलित शब्द उसी अंचल विशेष से लिए जाएं जो वहां से संबंधित हों जैसे 'सूखा' विषयक विशिष्ट शब्दावली राजस्थान से और संसाधन हेतु हिमालयी क्षेत्र से जैसे हिमाचल, उत्तरांचल आदि से ली जाए। सगंध पादप की एक किस्म 'Cymbogam Nardus' को राजस्थानी/मारवाड़ी में 'बूरघास' या 'बुरैरो घास' और कहीं-कहीं 'सुगनी घास' बोलते हैं और साथ लगते पाकिस्तान के बॉर्डर जैसलमेर के इलाके से आगे 'खाबि' घास बोला जाता है। ऐसे ही हमारे जम्मू में भी कई उदाहरण मिल जाते हैं। एक ओषधीय पौधा जिसे हिन्दी में सुरपंख और अंग्रेजी में Wild Indigo कहा जाता है - इस को डोगरी में सरपैंक्ख बोला जाता है। भाषा की अच्छी जानकारी रखने वाला व्यक्ति इस बात को अच्छी तरह समझा सकता है।

वैज्ञानिक शब्दावली को दूसरा और सबसे सशक्त समाधान संस्कृत भाषा ही दे सकती है। संस्कृत के शब्द हमारे सभी भाषाओं में निहित हैं जैसे असमिया, बांग्ला, गुजराती, कन्नड़, मलयालम, मराठी, नेपाली, उड़िया, पंजाबी, तमिल, तेलुगु तथा कश्मीरी एवं डोगरी आदि। अतः स्थानीय भाषाओं के लोकप्रिय शब्द और संस्कृत के तत्सम शब्दों को लिया जा सकता है। आधुनिक भारतीय भाषाओं की स्रोतभाषा संस्कृत आकार को साकार करने में पूर्णतया सक्षम है - यह एक सार्वभौमिक सत्य है। संस्कृत भाषा की यह विशेषता रही है कि यह अर्थाभिव्यक्ति करती है। शब्दोच्चारण के साथ ही अर्थ का प्रकाशन हो जाता है जैसे 'अजीर्णमंजरी' शब्द को बोलते ही पता चलता है कि अमुक ग्रन्थ में अजीर्ण रोगों से सम्बन्धी जानकारी है और 'अमृतमंजरी' शब्द शरीर को अजर-अमर बनाने के अमृततुल्य रसायनों के स्वास्थ्यकारी प्रभावों को अनायास ही द्योतित कर जाता है। 'ओजक्षय' शब्द हमारे आयुर्विज्ञान में पहले से था जिसे आजकल एड्स के लिए प्रयोग किया जा रहा है। 'ओजक्षय' शब्द आते ही वह अर्थ प्रकट हो जाता है जिन रोगों में ओज का क्षय हो जाता है।

विज्ञान के पारिभाषिक शब्दों का निर्माण करने या शुद्धतावादी दृष्टि से उनके पर्याय गढ़ने और उनकी असंदिग्ध स्वीकार्यता के लिए संस्कृत के विपुल साहित्य की अर्थगत सामर्थ्य और लोकभाषा की अपार लोकप्रिय शब्दसम्पदा से वैज्ञानिक शब्दावली में श्रीवृद्धि हो सकती है। विज्ञान मानवजीवन के सुखमय व सुविधाजनक जीवन में सहायक होता है अर्थात् विज्ञान किसी भी देश को खुशहाल, प्रगतिशील, समृद्ध व शक्तिशाली बनाता है। भारतीय परिप्रेक्ष्य में हिन्दी माध्यम से विज्ञान व प्रौद्योगिकी की अभिव्यक्ति स्वयंसिद्ध है।

डॉ. रमा शर्मा
हिन्दी अधिकारी,
भारतीय समवेत औषध संस्थान, जम्मू

''नारी सुरक्षा''

आज हम 21वीं सदी में जी रहे हैं। हम सभी अपने आपको बहुत ही आधुनिक मानते हैं। पर क्या वास्तव में ऐसा है?नहीं। क्योंकि आधुनिकता का मतलब पहनावा, शक्ल में चमक-दमक या भाषा में नयापन से नहीं होता बल्कि इसके साथ-साथ सबसे महत्त्वपूर्ण होता है सोच को बदलना। परन्तु, आज की बढ़ती घटनाएं न केवल हमें शर्मसार करती हैं बल्कि हम अपनी मान-मर्यादाओं को भी दर-किनार कर अपनी रोगी मानसिकता को हावी होने देते हैं। मैं यह नहीं कहना चाहता कि समाज के सभी व्यक्तियों में ऐसी बीमारी है, परन्तु यह भी सर्वविदित है कि- **'समूचे तालाब के पानी को गंदा करने के लिए एक सड़ी मछली ही काफी है'।**

आदिकाल से आधुनिक काल पर यदि नजर डालें तो एक बात अवश्य ही साबित होती है कि महिलाएं पुरूषों की तुलना में अपने आपको कमजोर मानती हैं। हो सकता है, सभी महिलाएं इससे सहमत न हों। जो ऐसा नहीं मानती, उनके मजबूत आत्मबल का मैं सम्मान करना चाहूंगा। मेरा यह मानना है कि महिलाओं में वो सारी शक्तियां विद्यमान हैं जो कि एक पुरुष में आमतौर पर होती हैं। जब महिला अपने आप पर उतर आती हैं या सीधे शब्दों में यह कहें कि लज्जापन को थोड़ी देर के लिए भूल जाय तो 'काली' या 'दुर्गा' बनने में भी देर नहीं लगाती। **'रानी लक्ष्मीबाई'** का नाम इन्हीं साहसी महिलाओं में से एक है। वह तब-तक ही खामोश रही जबतक कि अत्याचार सहनीय था परन्तु जब सीमा से बाहर हुई फिर उसने उन अत्याचारी अंग्रेजों को नारी-शक्ति का एहसास करा ही दिया, जिसे हम आज भी कविता की कुछ इन पंक्तियों में याद करते हैं -

चमक उठी सन सत्तावन में, वह तलवार पुरानी थी ।
खूब लड़ी मर्दानी वह तो, झांसी वाली रानी थी ।।

इसी तरह के अनेकों उदाहरण हैं जिनके द्वारा महिलाओं ने सिद्ध कर दिखाया है कि यदि वे चाह लें तो कोई भी क्षेत्र ऐसा नहीं जिसमें उनकी प्रबल भागीदारी न हो। भारतीय मूल की ही अमरीकी अंतरिक्ष यात्री सुनिता विलियम्स, भारत की कल्पना चावला, भारतीय पुलिस सेवा की प्रथम महिला पुलिस अधिकारी श्रीमती किरण बेदी, मुक्केबाज मैरी कॉम, पर्वतारोही बछेन्द्री पाल, तजम्मुल आदि जैसे अनेकों नाम हैं जिन्होंने अपने-अपने क्षेत्र में लोहा मनवाया है। आज इन सभी की हरएक उपलब्धि हमारे बीच अनुकरणीय बनी है। सभी महिलाओं में ऐसा जज्बा एवं हौसला है जिसके दम पर उन्हें जुझारू की तरह मजबूत बना सकती हैं। किसी की दकियानूसी बातों पर ध्यान नहीं देना चाहिए। समाज का कोई भी रीति-रिवाज सुरक्षा से ऊपर नहीं होता। जब महिलाओं को असुरक्षा का एहसास होने लगे तो सभी हदें पार करते हुए उसके साथ डटकर मुकाबला करना चाहिए। अभी भारत सरकार ने अपने रक्षा मंत्री जैसा मुख्य मंत्रालय भी महिला को सौंपकर यह सिद्ध कर दिया कि

महिला भी सुखोई की यात्रा भी अपने जज्बे को आगे रख कर सकती हैं।

आज के समय में महिलाओं पर हो रहे दुर्व्यवहार, अत्याचार इतने अधिक बढ़ गए हैं कि प्रत्येक दिन के अखबार की सुर्खियों की शुरूआत ऐसी ही खबरों से होती हैं। हमारे समाज की मनोदशा इतनी गिर चुकी है कि हम महिलाओं की आबरू बचाने के बारे में चिंतन करने को मजबूर हैं। किसी भी वारदात से पहले हमें क्यों नहीं समझ में आता कि वह भी किसी की माँ हैं, किसी की बेटी है, किसी की बहन है तो किसी की पत्नी है। हमें इस धरती पर लाने वाली भी तो एक महिला ही है फिर दूसरी महिलाओं के साथ इतना फर्क क्यों, इतनी क्रूरता क्यों?सरकारी तौर पर तो हम प्रत्येक वर्ष 8 मार्च को **'विश्व महिला दिवस'** भी मनाते हैं परन्तु मेरा यह मानना है कि प्रत्येक दिन महिलाओं के प्रति सम्मान भाव को बरकरार रखना चाहिए। कोई जरूरी नहीं कि किसी सार्वजनिक जगहों पर आयोजन करके ही ऐसे दिवस को मनाया जा सकता है, बस जरूरत है महिलाओं के प्रति अपने अंदर की सोच को बदलने की, महिलाओं का सम्मान करने की, जब उनके प्रति हमारी सोच बदलेगी, तो दिवस अपने आप ही मन जाएगा। कहा भी गया है कि, **''यत्र नारियस्तु पूज्यन्ते रम्यन्ते तत्र देवता''** अर्थात् जहां नारी की पूजा की जाती है वहीं देवता का वास होता है ।

केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल में महिलाएं न केवल देशभर के कठिन और दुर्गम इलाकों में ड्यूटियां करती हैं बल्कि विदेशों में भी विकट परिस्थितियों के बीच अपनी छाप छोड़ी हैं । 13 दिसंबर 2001 में संसद पर किए गए फिदायीन हमले के बारे में हम सभी जानते हैं कि इसी बल की महिला सिपाही श्रीमती कमलेश कुमारी के उस अदम्य साहस को आज भी हम सभी सैल्यूट करते हैं। मानसिक तथा शारीरिक रूप से कठोर एवं मजबूत होने के लिए आत्मबल तथा इच्छाशक्ति को और भी प्रबल एवं सुदृढ़ करने की आवश्यकता है।

वर्तमान परिवेश में महिलाएं केवल चार दिवारों के बीच रहनेवाली नहीं रह गई हैं, वे जीवन के भिन्न-भिन्न क्षेत्रों में अपनी उपस्थिति मुख्य रूप में दर्ज कराती रही हैं। जरूरत है अपने आपको साबित करने की। सभी महिलाएं यह ठान लें तो असंभव कुछ भी नहीं। समय पर जब ममतामयी हो सकती हैं तो मुश्किल में रौद्र रूप भी धारण कर सकती हैं जरूरत है केवल इच्छाशक्ति एवं आत्मविश्वास को जागृत करने की।

भगवान की एक अद्‌भुत देन है नारी
जिसके बिना अधूरी है दुनिया सारी ।
परिवार में निभाती है एक अहम् भागीदारी
लेती है अपने ऊपर सारी जिम्मेदारी ।।

आर.के.एल.कर्ण,
निरीक्षक (राजभाषा)
ग्रुप केन्द्र, के.रि.पु.बल, बनतालाब (जम्मू)

''शादी के निमंत्रण''

परंपरा अनुसार सभी शादियों के निमंत्रण-पत्र में श्री गणेश जी एवं अन्य देवी देवताओं की फोटो छापी जाती हैं, किन्तु निमंत्रण पत्र मिलने के पश्चात् अधिकतर लोग निमंत्रण पत्रों को इधर-उधर फेंक देते हैं, जिससे इनका अनादर होता है। जैसाकि अभी आने वाले दिनों में काफी शादियां होंगी और निमंत्रण पत्र देवी देवतओं के चित्रों सहित बड़ी मात्रा में छापे जाएंगे। इस संबंध में अनुरोध है कि जहां पर भी भगवान की फोटो या मंत्र आदि छापा हो, उसे काट लें और अलग से घर में रखें अन्यथा पानी में प्रवाहित कर दें, जिससे निमंत्रण पत्र बांटने वाले की श्रद्धा बनी रहेगी तथा देवी देवताओं का अपमान भी नहीं होगा।

''जूठा खाना''

प्राय: ये देखा जाता है कि लोग खाने का ब्याह शादियों और पार्टियों में खुलेआम दुरुपयोग करते हैं। इसका एक कारण यह भी है कि जो भी लोगों को खाने पर आमंत्रित करता है वह ये ज़रूर सोचता है कि हर एक आनेवाले को अच्छी तरह से खाना परोसा जाए और किसी भी वस्तु की कमी न आये। होटलों/रेस्टोरेंटस में भी प्राय: लोग खाना खाने जाते हैं तो खाने के वास्ते कई तरह के खानों को मंगवा लेते हैं जोकि इनसे खाया भी नहीं जाता और आधा खाना बर्तनों में ही छोड़ देते हैं और फिर पूरे बिल का भुगतान करके वहां से निकल पड़ते हैं। ठीक उसी प्रकार रेस्टोरेंटस में अपना खाना जूठा छोड़ कर आने की बजाय आपको चाहिए कि उतना ही खाना मंगवाएं जितने की ज़रूरत है।

भारत के अंदर कितनी गरीबी अभी है कि हज़ारों लोगों को दो वक्त का भर पेट खाना नसीब नहीं होता और कितने लोग रोज़ भूखे ही सो जाते हैं। एक तरफ तो लोगों की पेट की आग बुझाने के वास्ते दिन रात संघर्ष करना पड़ता है और दूसरी ओर हम लोग पढ़े लिखे होने के बावजूद झूठी शान दिखाने के वास्ते हज़ारो/लाखों का अन्न बेकार कर देते हैं बिना कुछ सोचे कि ये खाना जिसे हम बेकार फैंक रहें हैं कितने ऐसे लोगों का पेट भर सकता था जिनको रोज़ भरपेट खाना भी नसीब नहीं होता और भूखों सोना पड़ता है।

बात छोटी ज़रूर है लेकिन पते कि कि जब हमारे द्वारा खाने का दुरुपयोग होता है तो इससे केवल खाने की बर्बादी ही नहीं होती बल्कि हमारे द्वारा फैंका हुआ बेकार खाना कितना नुकसान पहुंचाता है ? यह खाना गन्दगी फैलाता है, दुर्गंध से वातावरण को दूषित करता है, इस खाने पर मक्खियों व

मच्छरों का बसेरा हो जाता है। जहां बफ़े पार्टी में खाना अपनी पसंद का ही ले सकते हैं, परोसी हुई थाली की अलग बात है, किन्तु बफ़े पार्टी में जहां लंच या डिनर में खाना आपने क्या लेना है या कितना लेना है, आपकी इच्छानुसार ही लिया जाता है, उसमें भी खाना अधिक मात्रा में लेते हैं और छोड़ देते हैं। यदि हम इतनी सी प्लानिंग नहीं कर सकते जिसमें खाना Surplus हो जाए तो एनएचपीसी के लिए बड़े-बड़े बजट व अन्य कार्यो की प्लानिंग क्या करेंगे ?

एस.कालगांवकर
कार्यपालक निदेशक
क्षेत्रीय कार्यालय, जम्मू

''मेरी कोई जायदाद नहीं''

तन्हा बैठा था एक दिन मै अपने मकान में,
चिड़िया बना रही थी घोंसला रोशनदान में।

पल भर में आती पल भर में जाती थी वो।
छोटे-छोटे तिनके चोंच में भर लाती थी वो।

बना रही थी वो अपना घर एक न्यारा,
कोई तिनका था, ईट उसकी कोई गारा ।

कड़ी मेहनत से घर जब उसका बन गया,
आए खुशी के आँसू और सीना तन गया।

कुछ दिन बाद मौसम बदला और हवा के झोंके आने लगे,
नन्हें से प्यारे-प्यारे दो बच्चे घोंसले में चहचहाने लगे।

पाल पोसकर कर रही थी चिड़िया बड़ा उन्हे,

पंख निकल रहे थे दोनों के पैरों पर करती थी खड़ा उन्हे।

इच्छुक है हर इंसान कोई जमीन आसमान के लिए,
कोशिश थी जारी उन दोनों की एक ऊंची उड़ान के लिए।

देखता था मै हर रोज उन्हें जज्बात मेरे उनसे कुछ जुड़ गए,
पंख निकलने पर दोनों बच्चे मां को छोड़ अकेला उड़ गए।

चिड़िया से पूछा मैंने तेरे बच्चे तुझे अकेला क्यों छोड़ गए,
तू तो थी मां उनकी फिर ये रिश्ता क्यों तोड़ गए।

इंसान के बच्चे अपने मां-बाप का घर नहीं छोड़ते,
जब तक मिले न हिस्सा अपना, रिश्ता नहीं तोड़ते।

चिड़िया बोली परिन्दे और इंसान के बच्चे में यही तो फर्क है,
आज के इंसान का बच्चा मोह माया के दरिया में गर्क है।

इंसान का बच्चा पैदा होते ही हर शह पर अपना हक जमाता है,
न मिलने पर वो मां बाप को कोर्ट कचहरी तक ले जाता है।

मैंने बच्चों को जन्म दिया पर करता कोई मुझे याद नहीं,
मेरे बच्चे क्यों रहेंगे साथ मेरे, क्योंकि मेरी कोई जायदाद नही।

सुनीता कुमारी
पी.एम.ई.प्रभाग
भारतीय समवेत औषध संस्थान, जम्मू

''शब्द संवारे बोलिए''

ये विश्व शब्द से ही उत्पन्न हुआ है। शब्द बहुत बड़ी शक्ति है जो नाद रूप में पूरे परिवेश में व्याप्त है। मानव बहुत भाग्यशाली है जिसे ये शब्द शक्ति प्राप्त है। व्यक्ति इसीलिए व्यक्ति है क्योंकि वह व्यक्त हो सकता है। शब्दों के द्वारा वाणी के माध्यम से अपने विचार दूसरों तक पहुँचा सकता है। जानवर के पास वाणी की शक्ति नहीं है। इसीलिए वह अपना कोई विकास नहीं कर सकता । जानवर में विकसित होने की कोई संभावना नहीं है लेकिन व्यक्ति जन्म से लेकर अपना विकास करता जाता है। क्योंकि व्यक्ति के पास बोलने की शक्ति है। वह शब्दों के द्वारा दूसरे तक अपनी बात पहुँचा सकता है और दूसरे की बात सुन सकता है समझ सकता है।

हम इन शब्दों का उपयोग कैसे करते हैं वणी के द्वारा क्या व्यक्त कर रहे हैं ये चिन्तन का विषय है। अगर हम सुबह से शाम तक बोले हुए शब्दों का व्यौरा तैयार करें तो हमें ज्ञात हो जाएगा कि हम अपनी इस शक्ति का कितना दुरपयोग करते हैं कितना व्यर्थ बोलते हैं। अगर हम किसी प्रकार से यह जान पाए कि शब्द का निर्माण कैसे होता है कितने केन्द्रों से गुजर कर शब्द हमारी जिह्वा तक पहुँचता है तो शायद हम शब्द का मूल्य पहचान सकेंगे। कुछ भी बोलने से पहले हम सचेत हो जाएगें कि कहाँ पर क्या बोलने जा रहे हैं और कैसे बोलने जा रहे हैं।

किसी प्रकार हमें मालूम हो जाए कि शब्द ही पहले अनहद नाद के रूप में मूलाधार में प्रवेश कर मणिपूरक चक्र में पश्यन्ती वाणी का रूप धारण करता है और यही पश्यन्ती वाणी कंठ प्रदेश में मध्यम वाणी के रूप में प्रकट हो मुख में बैखरी वाणी का रूप धारण करता है। यहाँ पर वाणी का स्थूल रूप प्रकट होता है इसलिए वेद कहता है:-

''शब्द ही ब्रहम्स्वरूप है''

प्रकृति ने ऐसी अनुपम दिव्य शक्ति जो हमें प्रदान की है, हम जाने कि इसका सद्पयोग कैसे करना है। अपनी वाणी का प्रयोग किस प्रकार करें कि मन का भाव भी संप्रेषित हो जाए और शब्दों के अर्थ भी न बदले। कहने वाला भी बोझ रहित हो जाए और सुनने वाला भी करूणा से भर जाए। बोलने वाला भी सुख से भर जाए और सुनने वाला भी आनन्दविभोर हो जाए । कई बार शब्द दूसरे को तीर की भाँति चुभ जाते है और कई शब्द दूसरों को माखन की भाँति सौम्यता प्रदान कर देते हैं। हमें देखना है हम शब्दों की वाणी का चुनाव कैसे करते हैं। रहीम जी तो कहते हैं:-

ऐसी वाणी बोलिए मन का आपा खोये।

औरों को शीतल करें आप भी शीतल होय।।

यह सत्य है कि वाणी की मधुरता सबको आनन्द प्रदान करती है वाणी की मिठास सबके भीतर सुख की आभा बिखेरती है और जब वाणी रसमय हो जाती है वाणी भावमयी हो जाती है, वाणी संवेदना का रूप धारती है तो रामायण की रचना होती है गीता का उद्भव होता है। वाणी रस बहाना आरम्भ कर देती है। कहने और सुनने वाले दोनों को शीतलता से भरती जाती है। संबंधों में मधुरता भरना

वाणी का कार्य है। मधुर भाषी तो कांटों को भी पुष्पित कर देता है लेकिन वाणी तभी शीतलता प्रदान करती है जब अपना भीतर, शीतलता से भरा हुआ हो। दूसरों तक तभी प्रेम का विस्तार किया जा सकता है जब अपने भीतर प्रेम के रस के चश्में फूट रहे होंगे, भीतर करुणा होगी तभी तो दूसरों तक करुणा का संचार हो सकेगा। रस दार फल ही खाने वाले को संतुष्टी देगा। भीतर से रसहीन सूखा हुआ फल भले ही बाहर से क्रांतियुक्त हो लेकिन वह रस प्रदान नहीं कर सकता खाने वाले को आनन्द नहीं दे सकता इसलिए ये बहुत आवश्यक है कि हमारे विचारों में हमारे भावों में मधुरता हो और वही मधुरता और शीतलता का प्रस्फुटन वाणी के माध्यम से हो।

भीतर सर्वेभवंतु सुखिना का भाव हो।

भीतर सब के लिए संवेदना भरी हो।।

भीतर सत्य होगा तभी तो वाणी में सत्यता प्रकट होगी और तभी वाणी दूसरों को योग्यता से भरने में सक्षम होगी। मधुरता से भरे हुए शब्द कठोर और क्रोध से भरे व्यक्ति को भी शान्त करने का कार्य कर देते हैं। मधुर वाणी व्याकुलता और दुख से भरे व्यक्ति को ठंड़क देने का कार्य करती है। क्यों किसी गीत के या भजन या गज़ल के दो अन्तरे ही हमारे मन को आह लादित कर देते हैं क्यों चलते-चलते किसी के प्रेम सने दो शब्द ही हमें सारा दिन संतुष्टि देते रहते है। और कई बार उदास मन को नई उमंग नई तरंग से भरने के लिए स्नेह के दो बोल ही प्रर्याप्त होते हैं। संतप्त हृदय को हर्षित करने के लिए संवेदना से भरे कुछ ही शब्द हृदय में नई रोशनी का संचार कर देते है। मधुर वाणी रसमयी वाणी पूरे वातावरण को रसमय कर देती है और रस यहां पर है वहीं पर परम आनन्द है वहीं पर शांति है इसलिए शब्द अपने आप में पूर्ण है।

शब्द की अपनी एक गति है शब्द की अपनी एक सीमा है। शब्द घायल भी कर सकता है शब्द पुष्प भी बरसा सकता है। शब्द सम्मानित कर सकता है और शब्द तत्काल अपमान भी कर सकता है। शब्द संबंधों की शक्ति है शब्द संबंधों की गरिमा है। शब्द आकर्षण का केन्द्र है। शब्द प्रेम भी है शब्द प्रार्थना भी है। शब्द गति भी है शब्द ही आहत और अनहद नाद भी है। मन की मधुर पुकार है शब्द। शब्द सुर है शब्द संगीत है। शीतल पवन का झोंका है शब्द! पहली बारिश की फुहार है शब्द! बहुत ही सुकोमल होते हैं ये शब्द। इसलिए इनका प्रयोग सजगता से किया जाए तो जीवन नदिया की बहती धारा जैसा बन जाता है।

तभी तो कबीर जी ने कितनी सशक्तता से हम सबको यह नारा दिया है।
शब्द संवारे बोलिए शब्द के हाथ ना पाँव ।
एक शब्द करे औषधी एक शब्द करे घाव।।

प्रवीन शर्मा
एन.पी.सी. प्रभाग,
भारतीय समवेत औषध संस्थान, जम्मू

लोह्ड़ी - डुग्गर का एक सांस्कृतिक पर्व

किसी देश की संस्कृति के विषय में जानना हो तो वहां के नागरिकों के धर्म, दर्शन, साहित्य, संगीत, चित्रकला, लोककला, वास्तुकला, लोकगीत, लोकसंगीत, लोकनृत्य आदि को परखा जाता है। दान और त्याग भाव की विशेषताओं से युक्त भारतीय संस्कृति सारी सृष्टि में प्रसिद्ध भारत देश की एकता में अनेकता वाली सांस्कृतिक दृष्टि ओर अपनी समृद्धियों के कारण विश्वभर में अब्वल मानी जाती है। भारत के विभिन्न प्रान्तों की संस्कृतियां चाहे अपने-आप में अलग और विशेषरूप है तो भी इनकी आत्मा एक होने के कारण यह भारतीय संस्कृति ही कहलाती हैं जो पूरे देश में व्याप्त है। डुग्गर की गौरवशाली संस्कृति भी इसी का एक छोटा सा रूप है।

डुग्गर संस्कृति और सांस्कृतिक परम्परा का एक विशेष अंश हैं यहां के पर्व-त्योहार जो बहुत उत्साह और जोश से मनाए जाते हैं। इन त्योहारों के कारण मानव जीवन में आने वाली शिथिलता जहां दूर होती है वहीं अपनी संस्कृति अैर समृद्ध परपंरा से हमारा संबंध भी बना रहता है। डुग्गर संस्कृति की धार्मिक पृष्ठभूमि में व्रत, संकल्प, पर्व-त्योहारों का परस्पर इतना घनिष्ठ संबंध है कि एक-दूसरे के बिना इनका अस्तित्व ही नहीं है।

पोष के महीने में शिशिर ऋतु अपने यौवनकाल में होती है और इस ऋतु का विशेष त्योहार लोहड़ी है जो इसी माह की अन्तिम तिथि और मकरसंक्रांति से एक दिन पहले मनाया जाता है। दक्षिण भारत में इसे 'पोंगल' के नाम से मनाया जाता है। इस दिन पृथिवी अपनी दक्षिणायण की छे माह की यात्रा सम्पूर्ण कर उत्तर की ओर रुख कर लेती है। इस दिन तिल खाने का म्हातम्य ब्रह्मपुराण में भी वर्णित है। इसका वैज्ञानिक कारण यह भी है कि तिल सेवन शरीर को गर्मी पहुंचाता है। इसलिए इस त्योहार पर लोग गुड़, रेवड़ी, तिल के लड्डू आदि बांटते और खाते हैं। मेले, पर्व-त्योहारों का संबंध आमतौर पर ऋतुओं, देवी-देवताओं और ऐतिहासिक महापुरुषों से होता है और लोह्ड़ी पर्व का संबंध दन्तकथाओं से जुड़ा प्रतीत होता है।

लोहड़ी का त्योहार पंजाब, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश और डुग्गरप्रदेश में बहुत श्रद्धा और आस्था से मनाया जाता है। वैसे तो पूरे देश में चाहे वह उत्तर प्रदेश, महाराष्ट्र आदि में मकरसंक्रांति या दक्षिण में पोंगल के रूप में हो, किसी न किसी रूप में इस के प्रति आस्था देखी ही जाती है। पोष माह की अन्तिम रात्रि के इस त्योहार की शुरूआत यहां दिन में ही हो जाती है। इस त्योहार का केन्द्रबिन्दु अग्निपूजन होने के कारण इसका सीधा संबंध आर्य-संस्कृति से है- ऋग्वेद की यह पहली ऋचा - 'अग्निमीळे पुरोहितं' - अग्निदेव की

स्तुति से आरंभ होती हे इसकारण भी इसका सांस्कृतिक महत्व सिद्ध होता है। लोहड़ी शब्द का विकास भी 'लुञ' अर्थात् छेद्दन धातु से होता है। छेद्दन का अर्थ है नष्ट करना। इस प्रकार स्पष्ट हो जाता है कि इस पर्व को अग्निपूजन हम सर्दी को नष्ट करने अथवा उसका मुकाबला करने के लिए करते हैं। मनुष्य की रक्षक और पालक शक्ति अग्नि का पारंपरिक महत्व इससे भी स्पष्ट है कि यज्ञ, हवनादि में कितना ही अन्न और घी अर्पित किया जाता है। हिन्दू धर्मरीति में विवाह संस्कार पर अग्नि के गिर्द इसे साक्षी मान फेरे लेने की रस्म के पीछे भी यही सोच है। डुग्गर की सांस्कृतिक परपंरा का एक बड़ा अंश लोह्ड़ी पर्व डुग्गर का खास त्योहार है। पौष माह के प्रारंभ होते ही डुग्गर प्रदेश के लड़के-लड़कियां अलग-अलग मंडली बनाकर सायं इकट्ठे होकर लोह्ड़ी मागने चल पड़ते थे। लोह्ड़ी जलावन और छज्जे बनाने के लिए पैसे इकट्ठे होते थे। लोह्ड़ी से एक दिन पहले लड़कियां लोह्ड़ी न मांगकर उस शाम गली-मुहल्ले में 'नींदरा' गाती ऐसे बोलती थीं-

नींदरा भैनो नींदरा-2
अज्जै दी रात भ्यागा दी रात
परसों कोई न आसां, ऐ आसां बीर ब्यासां
दो दराड़ियां मत्थे कन्ने मारिया
फक्कू देआ टोडेया तिलसी पो तलसाई जा
नींदरा भैनों नींदरा

लड़के, लोह्ड़ी में मांगी गई लकड़ियों को जला शाम को जो गीत गाते थे वह इस प्रकार है -

बल-बल अग्गी बलदी जा
खड़-पराली सलदी जा
गोटे साढ़े गिल्ले न
बालन साढ़े सिल्ले न

और लकड़ियां यह गीत गाती थीं -

टांडा - टांडा नी लड़कियों टांडा सी
इस टांडे दे नाल कलीरा सी
जुग जीवे नी भैन तेरा बीरा सी
सौदा लै गेई मालन जट्टी सी
मालन जट्टी ने लै लेआ घ्यो सी।

डुग्गर की धरती विशेष भी अपनी धरती के हर अध्याय की विशेषता सुनाने में पूरी सामर्थ्य

रखती है बेशक ये ऐतिहासिक गाथाएं और लोक कथाएं मौखिक रूप में चली आने के कारण जीर्ण-शीर्ण हो गई हैं। डुग्गर में लोह्ड़ी पर गाए जाने वाले गीतों की भी कुछ ऐसी ही स्थिति है। लोह्ड़ी के दिन लड़के-लड़कियां सुन्दर पोशाकों में अलग-अलग मंडलियों में बंटकर जिस घर में वर्ष के दौरान लड़का पैदा हुआ हो या लड़के की शादी हुई हो उस घर में गीतों, भांगड़ों और छज्जों की रौनक लगाए रहते थे। लड़कियों की एक मेडली ऐसे गाती है-

आं कुडे तरचौलिए
आं गीगा मोलिए
आं गीगा जम्मेयां
आं गुड़ बंडेयां
अन्दर बड़निएं 'नी' 'दलीला' करनिए 'नी'
पाई भरियै लेआ रोड़ी धरियै लेआ
माए दे लोह्ड़ी तेरी जीयै जोड़ी

लड़कियों का एक दूसरा गीत -

मूली दा पत्तर हरेया भरेया
बीर सदागर घोड़ी चढ़ेया
आ बीरा तूं जा बीरा
बन्नी तेरी हरी-भरी
इक फुल्ल डिग पेआ
राजे दे दरबार पेआ
टोडे उप्पर टोडा टोडे उप्पर साग
साग उप्पर मर्च
मर्च लग्गी कौड़ी देओ साढ़ी लोह्ड़ी ।

इस त्योहार पर पहले लड़कों की कई मंडलियां छज्जे बनाने के माहिरों से कई नमूनों के छज्जे बनवाते थे। बांस की पतली लड़कियों के ढांचे के बीच में मोर, शिव-पार्वती, राधा-कृष्ण, भारतमाता आदि की तस्वीरें लगी होती थीं। छज्जानाच जम्मू और केवल लोह्ड़ी पर ही पेश किया जाता था जो कहीं और नहीं दिखाई देता। छज्जा नचाते और 'फुम्मनी' नृत्य करते लड़के जो गीत गाया करते थो वह इस प्रकार है -

कप्पनछुरी भई कप्पन छुरी - हेरनी
कप्पां वाले आए सी - हेरनी
नौ सो तीर चलाए सी - हेरनी

इस गीतों में पुनरावृत्ति अधिक होती है। एक लड़का या लड़की बोल बोलते हैं और बाकी उसी एक शब्द को दोहराते जाते हैं –

दाना भाई दाना – दाना
बाग तमाशै जाना – दाना
बागा लब्भी कौड्डी – दाना
कौड्डी दित्ती घाइयेगी – दाना
घाइये दित्ती घाऽ – दाना

या फिर डंडारस लेकर दूसरी मंडली घुस आती है –

सुन्दर मुन्दरिये – हो
तेरा कुन बचारा – हो
दुल्ला भट्टी वाला – हो
दुल्ले दी धीऽ ब्याही – हो
नौ मन शक्कर आई – हो

एक लड़के को हरण बनाकर साथ में मंडली ऐसे गाती है –

ऊं हूँ हरणा
दुआर नेंइयों करना
हरणा मारी लत्ता दी
चूड़ भज्जी खट्टा दी

ऐसे गीत गाकर घर वालों से बधाई मांगते हैं और बधाई लिए बिना वहां से हिलते ही नहीं थे। जिस घर से बधाई न मिले या कम मिले तो लड़के-लड़कियां ऐसे कहते थे –

आखो मुड़ेयो हुक्का – हुक्का
ऐ घर भुक्खा – भुक्खा
आखो कुड़ियो हुक्का- हुक्का
ऐ घर भुक्खा – भुक्खा

कई जगहों पर इस त्योहार के अवसर पर 'हरण' लोकनाट्य के रूप में भी पेश किया जाता था। यह हरण लोकमंच संबंधी 'स्वांग' पेश करते थे। इस मंडली को कोई धनवान ही आमंत्रित कर बुलाता था क्योंकि इस मंडली का कार्यक्रम रातभर चलता था। इसके इलावा जम्मू शहर में किसी वर्गविशेष के लोग ढाची-जुलूस भी निकालते थे।

लोह्ड़ी की शाम लोग घरों, बाज़ारों और चौराहों पर लोह्ड़ी जलाते थे जिसे 'ग्याना बालना' कहा जाता था। इस जलावन में गुड़ तिल चावल से अर्घ्य दिया जाता है। डुग्गर संस्कृति के पर्व-त्योहारों का समय भी वैज्ञानिक तन्त्र पर निश्चित् किया गया है। बच्चों के गले में, बहनें भाइयों के गले में सूखे मेवों के हार पिरोकर पहनाया करती थीं। मूंगफली, रबड़ी, फल, सूखेफल आपस में बांटकर खाए जाते थे परन्तु समय के बदल जाने से आज यह समृद्ध परंपरा विलुप्ति के कगार पर है जिसकी महत्ता को समझने, पहचानने, अपनाने और बचाने की अत्यंत आवश्यकता ह अन्यथा आने वाली पीढ़ी अपनी संस्कृति और इस सांस्कृतिक विरासत से वंचित रहेगी।

डॉ. रमा शर्मा,
हिन्दी अधिकारी,
भारतीय समवेत औषध संस्थान, जम्मू

एक प्यारी सी कविता वक़्त पर

''वक़्त नहीं''

हर खुशी है लोंगों के दामन में,
पर एक हंसी के लिये वक़्त नहीं,
दिन रात दौड़ती दुनिया में,
ज़िन्दगी के लिये ही वक़्त नहीं।
सारे रिश्तों को तो हम मार चुके,
अब उन्हें दफ़नाने का भी वक़्त नहीं ।
सारे नाम मोबाइल में हैं,
पर दोस्ती के लिये वक़्त नहीं,
गैरों की क्या बात करें,
जब अपनों के लिये ही वक़्त नहीं।
आंखों में है नींद भरी,
पर सोने क वक़्त नहीं,
दिल है ग़मो से भरा हुआ,
पर रोने का भी वक़्त नहीं।
पैसों की दौड़ में ऐसे दौड़े,
की थकने का भी वक़्त नहीं,
पराये एहसानों की क्या कद्र करें,
जब अपने सपनों के लिये ही वक़्त नहीं।
तू ही बता ऐ ज़िन्दगी,
इस ज़िन्दगी का क्या होगा,
कि हर पल मरने वालो को,
जीने के लिये भी वक़्त नहीं ...।

सुनीता कुमारी
पी.एम.ई.प्रभाग
भारतीय समवेत औषध संस्थान, जम्मू

शीराज़ा पत्रिका, एकांकी विशेषांक के आधार पर जम्मू-कश्मीर का एकांकी साहित्य

एकांकी हिन्दी साहित्य की ऐसी विधा है जिसमें प्रायः नाटक के सारे गुण विद्यमान होते हैं किन्तु उसका अंत एक ही अंक में होता है । एकांकी में नाटक के सभी तत्व तो विद्यमान होते ही हैं साथ ही साथ उसमें कुछ ऐसी विशेषताएं भी होती हैं जो उसे एकांकी नाटक बनाता है, तभी तो आज इसे हिंदी साहित्य ने एक स्वतंत्र विधा के रूप में अपना लिया है । कुछ विशेषताएं निम्नलिखित हैं:-

(क) एकांकी में जीवन की किसी एक घटना, एक पक्ष या समस्या का ही चित्रण होना चाहिए ।

(ख) घटना कुतूहूलवर्द्धक प्रवाहपूर्ण, अंतर्द्वंद्वमयी होनी चाहिए। अंत प्रवाहपूर्ण और आकस्मिक होना चाहिए ।

(ग) एकांकी में स्थान एवं घटना तथा प्रभाव एवं वस्तु की एकता पर ध्यान देना चाहिए।

(घ) पात्र सीमित एवं कथा से पूर्णता सम्बद्ध होने चाहिए।" 1

हिन्दी साहित्य में एकांकी का उद्‌भव

हिन्दी साहित्य में एकांकी का उद्‌भव कब से और किस रचना से माना जाए, इस विषय में आलोचकों में पर्याप्त मतभेद हैं। लेकिन अधिकतर ने सन 1933 में प्रकाशित 'कारवां' नामक एकांकी, जिसे भुवनेश्वर मिश्र ने लिखा, को हिन्दी का पहला सफल एकांकी माना है । हिन्दी एकांकी के उद्‌भव के विषय में आलोचकों का चाहे जो भी मत हो इतना अवश्य है आज की हकनफी एकांकियाँ, सर्वप्रथम संस्कृत एकांकी से प्रेरणा लेकर हिन्दी में अपना प्रारंभिक रूप बनाती हैं और आगे चलकर पाश्चात्य एकांकी साहित्य के आधार पर इसने अपने वर्तमान स्वरूप को निणमत किया। हिन्दी में एकांकी शब्द अंग्रेज़ी के 'शार्ट स्टोरीज़' और 'वन एक्ट प्ले' से रूपांतरित होकर प्रयुक्त हुआ है।

''हिन्दी के एकांकी नाटककारों में भुवनेश्वर मिश्र, गणेशप्रसाद द्विवेदी, ड,. रामकुमार वर्मा, ड,. सत्येंद्र, द्वारका प्रसाद, सद्‌गुरुशरण अवस्थी, उदयशंकर भट्ट, सेठ गोविन्ददास, उपेन्द्रनाथ अश्क, पण्डित लक्ष्मीनारायण मिश्र, पंडित गोपीनाथ तिवारी, हरिंष्ण प्रेमी, भगवतीचरण वर्मा, अमृतलाल नागर, विष्णु प्रभाकर, श्री जगदीशचन्द्र माथुर, गिरिजाकुमार माथुर, ड,. लक्ष्मीनारायण लाल, ड,. धर्मवीर भारती, नरेश मेहता, मोहन राकेश, विनोद रस्तोगी, शिवप्रसाद सिंह, सुरेंद्र वर्मा, रेवतीरमण शर्मा, सत्येंद्र शरत, भारतभूषण अग्रवाल, ममता कालिया आदि उल्लेखनीय हैं।"2

इन एकांकीकारों ने एकांकी साहित्य के विकास में विशेष योगदान देकर उसे एक गति प्रदान की है ।

प्राय: नाटककारों ने ही एकांकी नाटकों की रचना की है और इसमें विशेष सफलता एवं पहचान भी बनाई है । वही आजकल लघु नाटक, दूरदर्शन एवं रेडियो एकांकी लिखने की प्रवृत्ति भी बढ़ी है । जिससे एकांकी साहित्य बहुत प्रभावित हुआ है।

इन सभी एकांकीकारों ने अपनी एकांकियों में विषय वैविध्य का प्रयोग किया है। इनकी एकांकियों में सामाजिक एवं पारिवारिक संबंधों की विभिन्न समस्याओं का चित्रण, यथार्थ जीवन की अभिव्यक्ति, राजनीति पर व्यंग्य, विभिन्न सरकारी एवं गैर सरकारी कार्यालयों में भ्रष्टाचार आदि को दिखाने का प्रयास किया गया है जो समसामयिक एकांकीकारों के समय मे व्याप्त थीं ।

आधुनिक समय में यह प्रवृत्ति और अधिक तीव्र हुई है, इस समय में मणि मधुकर, गिरिराज किशोर, कुसुम कुमार, रेखा जैन, शोभना भूटानी, शरद जोशी, लक्ष्मीकान्त वैष्णव, राधेश्याम, सफदर हाशमी, असगर वजाहत, रमेश उपाध्याय, जैसे अनेक रचनाकारों ने एकांकी नाटक एवं नुक्कड़ नाटक के क्षेत्र में खूब नाम कमाया है । संभवत: इनमें कुछेक अभी भी लिख रहे हों वर्तमान समय में भी एकांकी लेखन का कार्य रचनाकार भली प्रकार से कर रहे हैं जो हिन्दी के लिए एक अच्छी खबर है । इससे हमें एकांकी साहित्य के माध्यम से समसामयिक समय की विभिन्न समस्याओं का चित्रण मिलता है ।

हिन्दी एकांकी के इस संक्षिप्त परिचय के बाद बात आती है जम्मू-कश्मीर के एकांकी साहित्य की। जम्मू-कश्मीर के एकांकी साहित्य की जहां तक बात है तो हिन्दी की अन्य विधाओं जैसे कविता, कहानी, नाटक, उपन्यास आदि की भांति ही एकांकी साहित्य भी लिखा जा रहा है। हां इतना अवश्य है कि इनका मंचन न करने की समस्या जरूर सामने आई है। जम्मू-कश्मीर में कईं अच्छे हिन्दी एकांकीकार है जिनका अवदान उल्लेखनीय है। ऐसे नाटककारों में मोतीलाल कयमू, नरेंद्र खजूरिया, सुतीक्ष्ण कुमार आनंदम, ड,. ओम प्रकाश गुप्त, सुभाष भारद्वाज, शंकर शर्मा पिपासु, ड,. रतन शाल शांत, हरिकृष्ण कौल, ड,. शिवकृष्ण रैना आदि महत्वपूर्ण हैं । इधर एकांकी नाटक के विकास को कुछ बल मिला है । जम्मू - कश्मीर कला, संस्कृति एवं भाषा अकैडमी की शीराज़ा हिन्दी पत्रिका अगस्त-नवम्बर 2009 के माध्यम से एकांकी विशेषांक निकाला गया। इस अंक में जम्मू-कश्मीर के पुराने लेखकों के साथ कुछ नये एकांकी लेखकों को यह अवसर व प्लेटफार्म दिया ताकि वे अपनी प्रतिभा का परिचय दे सकें और अपनी एक पहचान बनाने में सफल हो सकें । सच में उन्होंने इसे बखूबी निभाया भी है ।

इस प्रकार से हम कह सकते हैं कि इस विशेषांक से एकांकी साहित्य को एक नई दिशा मिली है जिससे जम्मू-कश्मीर के लेखकों-पाठकों का इस ओर ज़्यादा से ज़्यादा ध्यान जायेगा । भविष्य में भी ऐसे अवसर मिलने की पूरी उम्मीद नज़र आती है ।

इस विशेषांक में प्रकाशित एकांकियों की यदि बात करें तो इसमें कुल 15 एकांकियाँ संकलित हैं। सभी में कोई न कोई घटना, पक्ष या सामस्या को सामने रखा गया है । एकांकी की सभी विशेषताएं उनमें नज़र आती हैं । इन सभी एकांकियों में से छ: एकांकियाँ पारिवारिक व सामाजिक संबंधों में

आपसी मन-मुटाव, पति-पत्नी की नोक-झोंक, हँसी-मज़ाक, बच्चों पर माँ-बाप के पड़ते गलत प्रभाव, अपने फैसले खुद करने का निश्चय, बूढ़ों-बुजुर्गों की समस्या, समाज एवं परिवार में बढ़ती पैसों की अहमियत एवं आधुनिकता की अंधी दौड़ में भागते लोगों आदि को दर्शाया गया है । साथ ही साथ अनेक छोटे-छोटे पहलुओं की तरफ भी लेखकों ने ध्यान आकर्षित करवाया है जिनका अवलोकन हम अगले पृष्ठों में करेंगे ।

इनके अलावा चार एकांकियाँ व्यंग्यात्मक शैली में लिखी गई हैं जनमे भ्रष्टाचार, इश्तिहारों व एड्स के बाद टेली श,पी के ब्रांडज के ऊपर, वर्तमान पराइवेटाईजेशन हो चुके मीडिया प्रणाली के सूक्ष्म तंत्र पर व्यंग्य किया गया है ।

इसके अलावा दो संदेशपरक एकांकियाँ, एक-एक यथार्थवादी और ऐतिहासिक पृष्ठभूमि पर रची एकांकियाँ हैं । इसके अतिरिक्त एक अन्य एकांकी जो मखनलाल पण्डिता की कश्मीरी कहानी 'दिलजोई' पर आधारित है ।

विशेषांक की संदेशपरक एकांकियों में प्रथम 'अज्ञानता' काल्पनिक पात्रों एवं कथ्य को लेकर रचा गया मोतीलाल कयमू का ऐसा एकांकी नाटक है जिसमें एक अंधी परंपरा एवं कुप्रथा जिसमें एक लड़की का बाप उसकी शादी उसी लड़के से करवाने को तैयार हो जाएगा जो उसे सबसे मोटी रकम देगा या सबसे अधिक पैसा-गहना बगैरा देगा । ''जनाब इस गांव का रिवाज है प्रत्येक लड़की का बाप लड़के के बाप से रुपये वसूल करने के बाद लड़की का ब्याह रचाता है । मुख्तसर यूं समझ लीजिए हुजूर लड़की को बेचता है ।अच्छी धन राशि हासिल करता है । कपड़े-लत्ते और जेवर भी हासिल करता है जिसे कहते हैं लड़की मांग रूपया ।"3

एकांकी के दो पात्र- महद गुना और समद कुम्हार अपने लँगड़े व तोतले लड़कों को शादी जून नामक पढ़ी-लिखी एवं होनहार लड़की से करना चाहते हैं जिसके लिए वे अपने जीवन की सारी पूंजी देने के लिए तैयार हैं और आपस में इसी कारण झगड़ते हैं। नाटक में कुल 9 पात्र हैं । जून एकांकी के अंत में नाटकीय ढंग से प्रवेश करती है और नाटक के संदेश एवं शीर्षक को स्पष्ट करती है कि उसके पिता से लेकर समद कुम्हार और महद गुना व उनके दोनों बेटे तथा अन्य सभी अज्ञानी हैं, इन सभी को शिक्षा एवं ज्ञान की जरूरत ताकि ऐसी परम्परायें तोड़ी व खत्म की जा सकें और ये सब ज्ञान से ही हो सकता है । इसके लिए वह अन्त में कदम उठाती है कि वह सब को ज्ञान का पाठ पढ़ाएगी । एकांकी के अन्य पात्र नाटकीयता, हास्य-व्यंग्य एवं दर्शकों का मनोरंजन करने के लिए उपस्थित होते हैं और पाठक को ऊबने नहीं देते जिनमे राजा सरसान खां, अहदी मसखरा, नब लाला, चोबदार, तुबलीकाक आदि पात्र हैं ।

वर्तमान संदर्भ की यदि बात करें तो आज भी यह समस्या, परंपरा या कुप्रथा हमारे समाज में कहीं-न-कहीं किसी न किसी रूप में जरूर नज़र आ जायेगी जहां पिता अपनी बेटी की शादी वहीं करेगा जहां सबसे अधिक पैसा या जहाँ से उसे अधिक पैसे मिलने की उम्मीद होगी ।

दूसरी संदेशपरक एकांकी 'मेरी तो काया पलट हो गई' शिव दोबालिया द्वारा रचित है जिसमें धर्म की आड़ लेकर, गेरुएं वस्त्र धारण करने वाले बाबाओं के चालाक तेवर से लोगों का शोषण एवं उनके विश्वास से खेलने का प्रयत्न किस प्रकार किया जाता है, उसको दर्शाया है । ''थैले में से भगवा रंग के कपड़े निकालो, साधु बनकर इस बुढ़िया के घर चलते हैं"।[4] दुनिया में न जाने कितने मुरली व किरपाराम (एकांकी के पात्र) हैं जो बाबाओं के भेष धारण कर राम रहीम या आसाराम बन कर लोगों की भावनाओं को आहत करते हैं। इसी तरह का संदेश एकांकी में मुरली, किरपाराम और बुढ़िया के माध्यम से दिया गया है जो वर्तमान समय का एक ज्वलंत मुद्दा बना हुआ है। सभी टी. वी. चैनलों व अखबारों में जगह जगह पकड़े जा रहे भेषधारी एवं पाखंडी बाबाओं के समाचार देखे जा सकते हैं। धर्म शुरू से लेकर आज तक एक ऐसी चीज है जिसकी आड़ लेकर कामचोर, निठल्ले व चालाक व्यक्ति अपना निजी स्वार्थ सिद्ध करने में तत्पर होते हैं।

व्यंग्यात्मक शैली की एकांकियों में 'अंधेर नगरी का जालिम गरीब' ओम गोस्वामी द्वारा रचित कार्यालयों में होने वाली धांधलियों एवं भ्रष्टाचार के बीच पिसते हुए गरीब व लाचार कर्मचारियों की स्थिति को दर्शाया गया है । ''आप मेहरबानी करें । मेरी जबान बेटियों की शादी रुकी पड़ी है ..... सारी आशाएं पेंशन केस सेटल होने पर है ।"5 बड़े बड़े पदों पर जब एक अयोग्य व्यक्ति बैठ जाता है जैसे इस नाटक का मुरली, तो शोषण, भ्रष्टाचार एवं धांधलियों का तंत्र कैसे चलता है इसका पर्दाफाश इस एकांकी में किया गया है ।

दूसरी एकांकी 'तैराक' में जो छत्रपाल द्वारा लिखित एकांकी है वर्तमान सरकारी कार्यालयों में होने वाले कामों का केवल कागज़ पर हो जाना और पैसे खा लेना, इसी को आधार बनाकर रचा गया है।

''कागज़ी कार्यवाही में बड़े छोटे इंजीनियर द्वारा स्विमिंग पूल बनवाने में नेता का सहयोग और पूल बना कर उसमें दो छोटे बच्चों की जान गवां कर उनके परिवार को मुआवजा दिलवाना जैसी भ्रष्टाचार कोई नया नहीं है।"[6] वर्तमान संदर्भ की यदि बात करें तो बाबाओं के बाद देश मे दूसरा जवलंत मुद्दा भ्रष्टाचार का ही है । जिसका यह छोटा सा रूप इस एकांकी को दर्शाया गया है । इसके साथ ही दो अन्य एकांकियों में पहले 'रास्ते और भी हैं' जो वरुण सुथरा द्वारा रचित है जिसमें इश्तहारों व एड्स के बाद टेली श,पी के ब्रांड्स के ऊपर व्यंग्य व दूसरी ''ताजा समाचार' रतन दोषी द्वारा लिखित वर्तमान पराईवेटाईजेशन हो चुके मीडिया प्रणाली के सूक्ष्म तंत्र पर व्यंग्य करता है।"[7] आज के वर्तमान समय की एक अन्य बड़ी समस्या यही है कि मीडिया अपना काम सही ढंग से नहीं कर रहा। पराईवेट चैनल्स ने तो प्रण ले लिया है जो व्यक्ति, पार्टियों नेता या बाबा उन्हें सबसे महंगी रकम देकर खरीद लेगा वे उसी के गुण गाएंगे । चाहे सही बात जो कुछ भी हो। लोगों को गुमराह करना, गलत खबरें देकर उनको भड़काने का कार्य आज मीडिया कर रहा है। प्रस्तुत एकांकी में भूकंप के बाद मीडिया ने उस पर किस प्रकार न्यूज़ दिखाकर उसपर अपनी रोटियां सेंकी इसका चित्रण बखूबी ढंग से मिलता है । जिससे मीडिया के प्राइवेट होने जी विसंगति स्पष्ट नज़र आती है ।

विशेषांक के अन्य एकांकी सामाजिक एवं पारिवारिक संबंधों पर आधारित हैं जिनमें - 'यह कैसी जिजीविषा' सुतीक्ष्ण कुमार शर्मा आनंदम द्वारा 'अपने अपने फैसले' रीता जितेंद्र द्वारा 'जीवन शैली' शिवदेव मन्हास द्वारा 'कलाकार' केवल गोस्वामी द्वारा, 'जीवन नहीं रुकता' कुमार अ. भारती द्वारा 'मेरे अपने' रजनीश कुमार गुप्ता द्वारा लिखित एकांकियाँ हैं ।

यह कैसी जिजीविषा' एक ऐसा पारिवारिक एकांकी है जिसमें दो पात्र डैडी और विक्की दोनों के प्रतीक नेपथ्य से गुजरते हुए उनके मन मे चल रहे अंतर्द्वंद्वभरी बातों को स्पष्ट करते हैं लेकिन वह उसे बकवास समझते हैं ।

एकांकी को पढ़ते हुए कुछ कुछ मोहन राकेश के आधे अधूरे नाटक आते हैं । डैडी और मम्मी पिछले कई सालों से इकट्ठे रह रहे हैं लेकिन उम्र बीतने के साथ साथ उनका दिल व मन एक दूसरे से ऊब चुका है। अब तो बस दोनों को ज़िन्दगी काटनी ही है साथ में और कोई चारा नहीं है, यही उनकी सोच है । चाहे तो मन से रहें या बे-मन से। इसी बात का प्रभाव उनके बेटे विक्की पर पड़ता है । इसलिए जब जब वह उसके विवाह की बात उससे करते हैं तो वह अपने मम्मी-डैडी से कहता है "क्या करूँगा विवाह करके? यही जो कुछ आप कर रहे हैं ।"[8]

साथ ही मन ही मन वह यह भी सोचता है कि यदि ऐसे ही जीना है तो शादी करके एक दूसरे की ज़िन्दगी बर्बाद क्यों की जाए ।

'अपने अपने फैसले' में घर-परिवार पति पत्नी की आपसी नोक झोंक, हंसी मज़ाक के साथ साथ बच्चों पर पड़ते माँ बाप के प्रभाव को दर्शाया गया है । जब सरला अपने बेटे पप्पू से पूछती है कि बाल दिवस पर आपने क्या खास करने की सोची है तो वो कहता है अपने फैसले खुद करने की सोच रहें हैं । मम्मी पूछती है कि ये आइडिया आपको कहाँ से आया तो वो कहता है " आप से । आपने भी Aunties के साथ Meetings में Decide किया था कि Mummy लोग अपनी श,पिंग पापा लोगों से पूछे बिना करेंगी ।"[9]

'जीवन नहीं रुकता' एकांकी में बाबू राम और रामलाल के माध्यम से परिवार में बुजुर्गों की स्थिति व उनकी समस्या की ओर ध्यान आकर्षित करवाया गया है । बाबूराम अपना दर्द इस प्रकार व्यक्त करता है ''करें तो क्या करें.....न कोई संगी ना साथी.....बच्चे भी अपनी अपनी ज़िदगी की दौड़ में व्यस्त हैं...हम बूढ़ों की कौन सुध ले....."[10]

आज के वर्तमान समय की ये विडंबना है कि सभी बच्चे अपने माँ बाप को भूल चुके है और वे पैसे व आधुनिकता में इतने डूब चुके है कि अपने माँ बाप का दर्द उन्हें बिल्कुल नज़र नहीं आता कि इस बुढ़ापे में उनके माता पिता को उनजे सहारे की ज़रूरत है । बहुत से बच्चे अपने माँ बाप को अनाथालयों में भी छोड़ आते क्योंकि वे उनको बोझ समझने लगे जाते है ।

'मेरे अपने' एकांकी में 14 वर्षों से विदेश जाकर अपने माँ बाप को भूल जाने की बच्चों की निठुरता

पर उनके माँ बाप की क्या स्थिति हो जाती है, इसका सजीव व मार्मिक वर्णन इस एकांकी में हुआ है ।

वर्तमान समय मे भी देखा जाये तो बहुत से लोग विदेश केवल नोकरी या पैसे के लिए जाते लेकिन फिर पूरी उम्र के लिए वही बस जाते हैं को अपने माँ बाप को भूल ही जाते है ।

'जीवन शैली' एकांकी में स्वार्थवश मनोज अपने जीवन को अपने तरीके से जीने का हिमायती है, जिसे और उसके इस तरीके को उसकी पत्नी ने तटस्थ होकर स्वीकार कर लिया है । दोनों अपने अपने तरीके से अपनी जीवन शैली को बनाये हुए हैं ।

'''कलाकार' एकांकी एक लेखक की व्यथा को व्यंजित व मानव मन का सूक्ष्म विश्लेषण करने वाला एक भाव प्रधान एकांकी है।"[11]

'मन लागो मेरो यार' ड,. सुधीर महाजन का ऐतिहासिक पात्र कबीर पर लिखा एक महत्वपूर्ण एकांकी है । एकांकी की सारी बातें प्रतीकात्मक हैं जिनको वर्तमान संदर्भ से जोड़कर देखे तो हम कह सकते कि आज यदि कोई कबीर बनकर विरोध करता है तो उसे सत्ताधारी मिटाने में ज़रा भी देर नहीं करते जैसे कबीर ने अपने समय में किया था। कबीर ने अपने समय के धार्मिक पाखण्डियों, मूर्तपूजा, जाति प्रथा आदि को चुनोती दी। हिन्दू हो या मुसलमान दोनों को उन्होंने जमकर लताड़ा व निशाना बनाया जिससे वे बहुत आहत हुए और कबीर को मिटाने का दोनों ने पूरा प्रयत्न किया ।

एकांकी में इसी तरह का चित्रण लेकिन लेखक कबीर को मिटने नहीं दिया जो इस बात की ओर संकेत करता है कि कबीर एक विचार है जो कभी भी मिट नहीं सकता। बेशक आज लोग कह दें कि फलां तिथि को कबीर का जन्म हुआ और फलां को मृत्यु हुई किन्तु सच तो यह है कि कबीर एक व्यक्ति न होकर एक विचार है। उसका कारण यह है कि कबीर आज के समय में कोई व्यक्ति नही है वो एक ऐसा विचार है जो युगों-युगों तक खत्म होने वाला नहीं है ।

एकांकी में कबीर हिन्दू-मुस्लिम दोनों धर्मों की खुलेआम निंदा करते हैं जिसे दोनों आहत होते हैं और उन्हें मिटाने की योजना बनाते है। जब उन्हें पता चलता है कि विभिन्न तरीकों से मारने के बाद भी कबीर नही मरा इसका मतलब वह कोई ईश्वरीय अवतार है और उसकी पूजा करना शुरू कर देते हैं। वर्तमान संदर्भ से जुड़ी कईं बातों को लेखक हमारे समक्ष इस एकांकी के माध्यम से लाता है। कबीर प्रासंगिक तो हैं ही साथ ही साथ लेखक प्रतीकात्मक रूप से यह भी कहना चाहता है कि लोगों ने कबीर की बातों को बिल्कुल नहीं समझा। वर्तमान समाज में कबीर के बड़े मंदिर बनाकर, कबीर की उसमें मूर्तियां बनाकर उनकी पूजा-अर्चना एवं उनकी जन्मतिथि पर बड़े बड़े स्पीकर लगाकर आवाजें दी जाती हैं जिन्हें कबीर यदि आज सुनते तो बहुत आहत होते। इन सभी बातों से एक बात तो स्पष्ट है कि समाज में दो वर्ग हैं एक तो वो जो आंख मूंदकर कबीर पर तो विश्वास करते हैं लेकिन कबीर ने क्या कहा उसके बारे में न सोचते हैं न ही मानते हैं । दूसरा वर्ग वह है जो आज के वर्तमान समय

मे इन मंदिरों का संचालन कर रहा है उनको न तो कबीर से कुछ लेना है न कबीर के विचारों से । उन्हें सिर्फ अपना निजी स्वार्थ सिद्ध करना, पैसा कमाना या जनता को बेवकूफ बनाना है ।

विशेषांक का अंतिम एकांकी एक ऐसे पात्र को आधार बनाकर लिखा गया है जो दिलजोई करता है यानि किसी का यदि सरकारी कार्यालय में उसका कोई काम नहीं हो रहा होता है तो उसका दिल रखने के लिए कह देता है " तू ए. जी. आफिस जा । वहां असदुल्ला मीर एकाउंट अ,फिसर है, उसे कहना गुलाम अली ने भेजा है । हाथों हाथ ठीक कर देगा।"[12]

लेकिन वहां जाने पर चमनलाल को पता चलता है कि वहां तो इस नाम का कोई व्यक्ति ही नही है। इसी तरह वो असदुल्ला मीर को और भी बहुत कुछ बनाकर लोगों के साथ दिलजोई करता है और अंत मे पता चलता है कि यह उसके पिता का नाम है जो एक तरखान था और पांच साल पहले मर चुका था ।

अंतत: कहा जा सकता है कि जम्मू-कश्मीर के एकांकी साहित्य का भविष्य उज्ज्वल नज़र आ रहा है परन्तु उसकी सीमाएं ये हैं कि इन एकांकियों का मंचन, लोक मंचन एवं रेडियों मंचन हो । रंगकर्मियों के समक्ष कल्चर अकेडमी ने यह विशेषांक निकालकर सराहनीय कार्य किया है । इसे और समृद्ध करना चाहिए ताकि और भी एकांकी साहित्यकारों का इस दिशा में प्रवेश हो । एकांकी की –ष्टि से उपर्युक्त सभी एकांकियाँ मंचनीय हैं, जिनका मंचन सफलतापूर्वक किया जा सकता हैं ।

संदर्भ :-

1- हिन्दी का गद्य साहित्य, ड,. रामचंद्र तिवारी, पृष्ठ संख्या - 388

2- वहीं, पृष्ठ संख्या - 387

3. शीराज़ा पत्रिका, अगस्त-नवम्बर 2009 विशेषांक, पृष्ठ संख्या - 30

4. वहीं, पृष्ठ संख्या - 121

5. वहीं, पृष्ठ संख्या - 86

6- वहीं, पृष्ठ संख्या - 18

7- वहीं, पृष्ठ संख्या -20

8- वहीं, पृष्ठ संख्या - 51

9- वहीं, पृष्ठ संख्या- 72

10- वहीं, पृष्ठ संख्या - 140

11- वहीं, पृष्ठ संख्या - 19

12- वहीं, पृष्ठ संख्या - 198

सुशील कुमार

शोधछात्र, हिन्दी विभाग,

जम्मू विश्वविद्यालय, जम्मू कश्मीर

70 वर्ष बाद के जम्मू-कश्मीर का साम्प्रदायिक चेहरा और दिनों-दिन बनते अनेकों पाकिस्तान : एक चिन्तन

27 अप्रेल 2016 को हिन्दी के जानेमाने लेखक डॉ. नरेन्द्र मोहन जी से हुई मेरी एक छोटी-सी वार्ता में उन्होंने मुझे बताया कि ''जिस विषय पर आप लिख रहे होते हैं, उस पर लगातार लिखते रहना चाहिए। निरंतर लिखते रहने से उस विषय पर आपकी पकड़ बनती है और आपकी लेखनी भी लगातार निखरती जाएगी।'' उनकी बात मेरे दिल को कहीं छू गई। पर जब मैं लिखने बैठता हूँ तो लगता है कि जम्मू-कश्मीर जैसे राज्यों के लिए साम्प्रदायिकता के बारे में लिखना कितना बेमतलब है। पूरे भारत की दृष्टि से अगर देखा जाए तो जम्मू-कश्मीर की साम्प्रदायिकता का एक अलग ही रूप देखने को मिलता है जहाँ के साम्प्रदायिक आवाम को कोई भी लेखनी असर करती हुई नहीं दिखाई देती।

साम्प्रदायिकता की अगर बात करें तो केवल अपने सम्प्रदाय का हित चाहना और दूसरे सम्प्रदाय के हितों की उपेक्षा करने को तैयार रहना ही साम्प्रदायिकता है। डॉ. नामवर सिंह के अनुसार ''हम वामपंथी लोग सोचते थे कि धर्म माने सम्प्रदायवाद। जबकी पाया यह जाता है कि गहरा धार्मिक आदमी उतना सांप्रदायिक नहीं होता, बल्कि बिलकुल नहीं होता। सांप्रदायिक वे होते हैं जिनमें धार्मिक आस्था नहीं होती।'' साम्प्रदायिकता के लिए अंग्रेज़ी में (Communalism) शब्द प्रचलित है। अत: कहा जा सकता है कि ''सांप्रदायिक आधार पर बंटे दो2 । समुदायों के बीच झगड़े और मारकाट को साम्प्रदायिकता कहते हैं। 19वीं सदी के अंत में आरम्भ हुई इस विचारधारा के 1936 तक के स्वरूप को उदार सांप्रदायिकता कहा जाता है।''1 भारत में छुट-पुट साम्प्रदायिकता थी जो उभर कर कभी सामने नहीं आई। अंग्रेज़ों ने अपने लाभ हेतु उस छुट-पुट सांम्प्रदायिकता को एक विशाल रूप दे दिया, जिसका भुगतान भारतवासियों को आज भी करना पड़ रहा है।

भारत के सभी राज्यों में इस साम्प्रदायिकता के अलग-अलग रूप देखने को मिलते हैं। उन विविध रूपों में जम्मू-कश्मीर राज्य में साम्प्रदायिकता का जो रूप देखने को मिलता है, वो बेहद खोफनाक, डरावना, हिंसक और रोंगटे खड़े कर देने वाला रूप है। साम्प्रदायिकता का एक रूप वो जो 1947 में भारत विभाजन के समय प्रत्यक्ष रूप में सामने आया और कुछ ही समाय में हज़ारों लोगों को मौत के घाट उतार गया। दूसरा अप्रत्यक्ष रूप यह है जो जम्मू-कश्मीर राज्य को अंदर-ही-अंदर

खोखला किया जा रहा है। नासूर की तरह साम्प्रदायिकता का यह रूप इस राज्य के आवाम की रगों में लगातार विकसित होता जा रहा है। साम्प्रदायिक उन्माद के इस वातावरण को पैदा करने और उसे विकसित करने में सामाजिक से ज़्यादा महत्वपूर्ण राजनीतिक कारण रहते हैं। समाज में सभी आवाम शांति से जीवन व्यतीत करना चाहते हैं, लेकिन सत्ता संघर्ष और सत्ता नियन्त्रण के प्रयासों में यह शान्तिपूर्ण जनजीवन अस्त-व्यस्त किया जाता है। जम्मू-कश्मीर राज्य में बंटवारे के समय से यही अवधारणा रही है। यहाँ का मनुष्य एक इन्सान न होकर केवल हिन्दू या मुस्लमान है और इस अवधारणा के बीज यहां की सरकारें स्वयं बोती हैं। साम्प्रदायिक कोई भी घटना जब प्रत्यक्ष रूप में विभाजन की तरह बड़े पैमाने पर घटती है तो सबका ध्यान उस तरफ आकर्षित होता है और उस पर चिन्तन-मनन भी किया जाता है। जम्मू-कश्मीर एक ऐसा राज्य है जहाँ साम्प्रदायिक घटनाएं अप्रत्यक्ष रूप में दिनोंदिन तेज़ी से घटती जा रही हैं पर किसी का ध्यान इन पर नहीं जाता। हालाकि यह छोटी-छोटी घटनाएँ ऐसे घातक विष की तरह जम्मू-कश्मीर राज्य में तेज़ी से फैल रही हैं जो इसा राज्य को अन्दर-ही-अन्दर खोखला किए जा रही हैं पर भारत सरकार इन पर कोई सकारात्मक चिंतन करती दिखाई नहीं देती वरना आज तक कश्मीर मसला हल हो चुका होता। पार्टी चाहे कोई भी हो कांग्रेस या बी.जे.पी. चुनाव के दौरान राज्य में आकर कश्मीर समस्या के मुद्दे पर मोटे-मोटे वादे किए जाते हैं और जनता की आँखों पर पट्टी बांधकर अपने वोट बैंक भरे जाते हैं। ज्यों ही सत्ता हासिल हुई तो उन वादों की अनिवार्यता और व्यवहारिकता शिथिल पड़ जाती है। आमने-सामने सरकार कथनी और करनी में अंतर कर जनता को गुमराह कर जाती है।

जम्मू-कश्मीर की उन अप्रत्यक्ष घटती घटनाओं की हम बात करें जिन्हें भारत सरकार द्वारा लगातार नजरांदाज़ किया जा रहा है। यहां के लौकल अखबारों में कुछ खबरें ऐसी हैं जो हर दिन हमें पढ़ने को मिलती हैं। जिनमें से एक है भारी मात्रा में आतंकवादियों के हथियार बरामद होना। दूसरी हर रोज़ एक-न-एक सेना का जवान जम्मू कश्मीर के किसी-न-किसी इलाके में शहीद होना। शासन के सियास्ती खेलों में इन चीज़ों को नज़रांदाज़ किया जाता है। एक तथ्य पर तनिक ध्यान दें हर रोज़ जिस मात्रा में हथियार जम्मू-कश्मीर राज्य में बरामद होते और लगातार हो रहे हैं 1947 से लेकर आज तक के सभी बरामद हथियारों का अगर एक ही बार आतंकी इस राज्य पर प्रयोग करें तो राज्य की तस्वीर क्या बनेगी? दूसरा तनिक सोचें अगर हर दिन 1947 के बाद जो सेनानी एक-एक करके राज्य के किसी-न-किसी कोने में शहीद होते हैं उनकी गणना क्या होगी। सप्ताह में अगर पाँच सेनानी शहीद होते हैं तो महीने में बीस और वर्ष में 240 हुए। जम्मू-कश्मीर के लोकल अखबारों को लेकर विभाजन से आज तक शहीद हुए सेनानियों की अगर गणना की जाए तो शायद इतनी बड़ी संख्या शहीद जवानों की हमारे समझ आए जिस पर हम यकीन न कर सकें। यह शायद

किसी बहुत बड़े युद्ध से भी ज़्यादा शहीदों की संख्या हो। अब चिन्तन का विषय यह है कि यह छोटी-छोटी घटनाएँ जो जम्मू-कश्मीर राज्य को अंदर-ही-अंदर खोखला किए जा रही हैं सरकार क्यों इनकी अनदेखी कर रही है, जबकि उन घटनाओं का उद्देश्य और परिणाम शायद कश्मीर के रूप में एक और पाकिस्तान बनने के रूप में भारतवासियों के सामने आए।

जिस टीस के चलते भारत जैसे धार्मिक देश को दो टुकड़ों में बँटना पड़ा था उसका सबसे बड़ा लक्षण था असहिष्णुता यानी अपने से विरोधी विचारों को अस्वीकार करना। अगर भारत-पाक विभाजन केवल भूगोल और मज़हब को लेकर था तो बंटवारा होते ही असहिष्णुता खत्म क्यों नहीं हो सकी?यह असहिष्णुता आज भी जम्मू-कश्मीर राज्य में हिन्दू-मुसलमान दोनों धर्मों के लोगों में भरपूर व्याप्त है। इस आधुनिक और इंटरनेट की आभासी दुनिया में यह पहले से अधिक तूल पकड़ चुकी है जिसके चलते यहाँ दोनों मज़हबों के लोग आपस में बुरी तरह से लगातार टकराए जा रहे हैं।

हैवानियत जब इन्सानियत का रुतबा ले लेती है तब मनुष्य तुच्छ-से-तुच्छ काम करने में भी तनिक संकोच नहीं करता। जम्मू-कश्मीर रारज्य में भी कुछ ऐसे ही कांड सामने आते हैं जहां इन्सानियत पर हैवानियत हावी हो जाती और लोगों का हैवानियत भरा वहशी चेहरा सामने आता है। पाकिस्तान की तरफ से हो रही जम्मू-कश्मीर की सीमा के निकट इलाकों में फायरिंग और गोलाबारी जिससे दर्जनों लोग, घर, जानमाल, सम्पत्ति लगातार नष्ट हो रही है। जहाँ इन्सान के साथ आपको पूरी-की-पूरी इन्सानियत दफन होती नज़र आएगी। पूरे कश्मीर समेत पुँछ, राजौरी, साम्बा, कठुआ, अरणिया आदि इलाकों में पाकिस्तान की तरफ से हो रही फायरिंग और गोलाबारी में मौत के साथ हज़ारों आपदाओं का सामना लगातार उन लोगों को झेलना पड़ रहा है। सरकार का ध्यान इन घटनाओं की तरफ केवल उस वक्त आकर्षित होता है जब यह बड़े पैमाने पर घटती हैं। एक बात का स्मरण हमेशा सरकार को रखना चाहिए कि उन बड़ी त्रासदियों से यह छोटी-छोटी घटनाएँ अत्यंत खौफनाक और अंदर-ही-अंदर सम्पूर्ण मानवता तक को नष्ट कर देने वाली होती हैं।

जम्मू-कश्मीर राज्य में आज़ादी से लेकर आज तक हिन्दू-मुसलमान दोनों कौमों का आपसी द्वेष खत्म नहीं हो पाया है बल्कि और बढ़ गया है। यहाँ धर्म के नाम पर एक छोटी-सी लड़ाई इतनी तूल पकड़ लेती है कि दर्जनों लोगों को मौत के घाट उतार जाती है। यहां के दूर दराज़ इलाकों में ऐसे माहौल में सेना के जवान हिन्दू और मुस्लिम बहुत इलाकों के बीचो-बीच कटिली तार बिछा देते हैं ताकि दंगे तूल न पकड़ सकें। एक ही भू-भाग को दो हिस्सों में बांट दिया जाता है और बीच में कंटीली तार और तैनात सेना के जवान। ऐसे ही छोटी-छोटी सीमाऐं बंधते जम्मू-कश्मीर राज्य में

अनेकों पाकिस्तान दिनोदिन बनते जा रहे हैं। किश्तवाड़ का किचलू कांड, अमरनाथ श्राईन बोर्ड का भम-भम भोले और अल्लाह-हू-अकबर के नारों के बीच भद्रवाह कांड आदि अनेकों इसके उदाहरण हैं जहां 6 कुछ ही समय में हिन्दू-मुस्लिम सीमाऐं एकदम से बंट जाती हैं मानो एक हिन्दोस्तान दूसरा पाकिस्तान।

जम्मू-कश्मीर राज्य में साम्प्रदायिक रूपी इस घृणा के कारण ऐसे ही छोट-छोटे अनेकों पाकिस्तान बनाए जाते हैं ताकि साम्प्रदायिक आवामों में शांति बनी रहे। जम्मू-कश्मीर राज्य के अन्दरूनी आसार ऐसे हैं कि एक दिन भारत सरकार इस राज्य के छोटे-छोटे तूल पकड़ते दंगों को काबू नहीं कर पाएगी, जिसका सीधा परिणाम कश्मीर रूप में एक और पाकिस्तान बनकर सामने आएगा। तब भी जिन्ना जैसा कोई नेता आवाम के आगे माफीनामा करेगा पर वक्त निकल चुका होगा कश्मीर के रूप में दूसरा पाकिस्तान तैयार हो चुका होगा।

यह कश्मीर का मसला और यहां के साम्प्रदायिक तूल पकड़ते दंगों के बारे में चिंतन-मनन करना समय की मांग बन चुकी है। जाहिर सी बात है अगर भूगोल ही विभाजन का मुद्दा था तो बंटवारे के बाद भी जम्मू-कश्मीर राज्य में अब तक वो घृणा खत्म क्यों नहीं हो पाई? क्यों आज भी ये घृणा गाय काट कर खुलेआम हिन्दु बहुल इलाकों में फैंक देती है, कभी इन्सान को मुर्गे की तरह काटती नज़र आती है, क्यों यह जम्मू-कश्मीर में हो रही शांतिपूर्ण नारेबाज़ी के बीच वगावत करवाकर भद्रवाह के मंजीत जैसे बेगुनाह लोगों की जान ले लती है तो कभी खूंखार रूप धारण कर भम-भम भोले और अल्लाह-हू-अकबर के नारे लगाने लगती है। सबसे घातक बात तो यह है कि आवाम जिस सरकार से कई उम्मीदें रखती है वही सरकार घृणा रूपी इस खौफनाक उन्माद का प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष रूप में डट कर साथ देती है जो वाकई में एक चिन्तनीय विषय है।7

संदर्भ :-

1 हिन्दी आलोचना की पारिभाषिक शब्दावली, डॉ0 अमरनाथ, पृ.सं. 367

रवि कुमार
पीएच.डी. शोधछात्र
जम्मू विश्वविद्यालय, जम्मू कश्मीर

आयुर्वेद में रोगों की सरल निदान पद्धति और वनौषधियों से उनका उपचार

आयुर्वेद में स्वस्थ की परिभाषा बताते हुए कहा गया है कि जिस व्यक्ति के शरीर में दोष, अग्नि, धातु, मल उचित अथवा सममात्रा में हों, जिसकी आत्मा, इन्द्रियाँ तथा तन प्रसन्न अथवा निर्मल हों वह व्यक्ति स्वस्थ कहा जाता है।

रोग की परिभाषा को सूत्ररूप स्पष्ट किया गया है कि शरीर में दोषों की विषमता ही रोग और सम मात्रा में रहना ही आरोग्यता है।

दोष तीन बताए गए है वायु, पित्त और कफ। ये जब शरीर में सम अथवा उचित मात्रा में रहते हैं तो शरीर का धारण करते हैं और विषम मात्रा में होने पर रोग उत्पादक होते हैं। इसलिए शास्त्र का कार्य एवं प्रयोजन दोषों को सम मात्रा में रखना ही निर्दिष्ट है। इन वात, पित्त, कफ को त्रिदोष संज्ञा दी गई है। इन त्रिदोषों को ध्यान में रखकर ही रोग निदान तथा चिकित्सा करने की पद्धति आयुर्वेदिक पद्धति कही जाती हे।

रोगों की असंख्यता के कारण सभी रोगों का नामोल्लेख सम्भव नहीं, और नित्य नवीन रोग संसार में उत्पन्न होते ही रहते है। इसके अतिरिक्त यह भी संभव है कि शास्त्र में रोगवर्ण न होते हुए भी किसी समय निरन्तर अनध्ययनवश अथवा विस्मृति के कारण रोग का शास्त्रोक्त नाम स्मरण न आए, ऐसी स्थिति में शास्त्र का निर्देश है कि चिकित्सक को लज्जा अनुभव न कर दोष के लक्षणों को देखकर चिकित्सा में प्रवृत्त हो जाए। उदाहरणार्थ सिरोसिस आफसियर, ल्यूकेमिया, ऐनेकेफेलाइरिस, टायफाइड, न्यूमोनिया, एड्स आदि का, इसी प्रकार के नामों से यद्यपि उल्लेख नहीं है परन्तु दोषादि को देखकर की गई इनकी चिकित्सा फलवती होती ही है।

शास्त्र में रोग निदान के पाँच प्रकार बताए गए है निदान अर्थात् हेतु, पूर्वरूप, रूप अथवा लक्षण, सम्प्राप्ति रोग की सम्यक् प्राप्ति अथवा ज्ञान तथा उपशय अर्थात् रोग की शान्ति अथवा शमन।

रोग विशेष के ज्ञान के लिए तीन उपायों का भी उपदेश है ये है आप्तोपदेश अर्थात् प्रामाणिक व्यक्तियों द्वारा प्रदत्त ज्ञान, प्रत्यक्ष और अनुमान ।

रोग ज्ञान के लिए यद्यपि यन्त्रों का प्रयोग निरन्तर प्रयुक्त होता आ रहा है और ये हमारी इन्द्रियों की ज्ञान ग्रहण क्षमता में वृद्धि कराते हैं परन्तु ये यन्त्र निर्जीव द्रव्य अथवा साधन हैं। इनका संचालन मनुष्य के अधीन है। चिकित्सक को मात्र यन्त्रों के ही अधीन न रहकर प्रभुप्रदत्त ज्ञानेन्द्रियें की क्षमता का भी विकास करना चाहिए। शास्त्र में स्पष्ट निर्देश है कि हाथ के अंगूठे के मूल में स्थित जीव साक्षिणी नाड़ी पर अंगुलि रखकर उसकी चेष्टाओं द्वारा रोगी के सुख दु:ख अर्थात् स्वास्थ्य एवं दोषवैषम्य के विषय में चिकित्सक को जानकारी प्राप्त करनी चाहिए। इसी ज्ञान ग्रहण की जीवन शक्ति द्वारा चिकित्सक रोगी की एवं अपनी आत्मा में तादात्म्य अथवा नैरन्तर्य स्थापित कर जो सूक्ष्मातिसूक्ष्म ज्ञान प्राप्त कर लेता है वह यन्त्रों द्वारा भी संभव नहीं ?

शास्त्रकारों को ज्ञात था कि सभी चिकित्सक नाड़ी ज्ञान द्वारा रोगी की आत्मा से नैरन्तर्य स्थापित नहीं कर पाते। अत: सामान्य चिकित्सक के लिए नाड़ी आदि रोग ज्ञान के आठ सरल उपाय भी समझाए गए हैं। ये है नाड़ी, मूत्र, मल, जिह्वा, शब्द, स्पर्श, दृष्टि और आकृति परीक्षा

ऐसे सामान्य चिकित्सक के लिए चिकित्सा करते समय रोग के मूल कारण दोष को समझना अनिवार्य है। इसके लिए वात, पित्त, कफ के प्राकृत और विकृत कर्म विस्तार से उल्लिखित हैं।

चिकित्सा के प्रसंग में रोगों तथा दोष विशेष के उपचार के लिए प्रत्येक वनौषधि के गुण दोषों की विस्तृत विवेचना कर उनके, गुण एवं वर्ग भी विस्तार से उल्लिखित हैं। जिससे चिकित्सक रोगनिवारण के लिए अपनी सुविधानुसार सुलभ-औषधि का चयन कर सकता है। चिकित्सा को और सरल बनाने के लिए तथा चिकित्सक के श्रम को न्यून करने के लिए प्रत्येक दोष एवं रोग की श्रेष्ठतम औषधियों पर भी विस्तार पूर्वक अध्याय लिखकर उपकृत किया गया है।

सन्दर्भ ग्रन्थ - भेषज्यरत्नावली

- माधवनिदान

डॉ. रमा शर्मा,
हिन्दी अधिकारी,
भारतीय समवेत औषध संस्थान, जम्मू
मो० 9419725099

वैदिक साहित्य में मानवीय मूल्य

वेद भारतीयों का सर्वस्व है। प्राचीनतम, पवित्रतम तथा ज्ञानविज्ञान से संवलित होने के साथ-साथ इसमें प्रतिपादित उदात्त मानवीय मूल्यों के कारण ही वेदों का महत्व सार्वकालिक तथा सार्वभौम है। वैदिक वाड.्मय में विश्व वन्धुत्व, विश्वशान्ति तथा ऐक्य के प्रतिपादक दिव्य सन्देशों में मानवीय मूल्यों की उदास्तता स्पष्ट अभिव्यक्त होती है। एक वर्ग दूसरे वर्ग के प्रति, एक समुदाय दूसरे समुदाय के प्रति, एक राष्ट्र दूसरे राष्ट्र के प्रति स्वार्थसिद्ध से ऊपर उठकर साहार्द, समन्वय तथा सहयोग की भावना से ओत-प्रोत होगा तभी सर्वत्र सामाजिक अभ्युदय की स्थापना सम्भव है। इसके लिए मानवमात्र को अपने मानवीय मूलयों की सुरक्षा आवश्यक है।

युजुर्वेद 29/51 में कहा गया -

'पुमान्पुमासं परि पातु विश्वत:' अर्थात् मानव मानव की सब प्रकार से रक्षा करे। 'मा हिक्ष सी: पुरुषं जगत् (यजु016/3) अर्थात् मनुष्य किसी भी हिंसा न करे अर्थात् इस संसार में वह किसी दूसरे मानव को कष्ट न पहुँचायें बल्कि -

मित्रस्याहं चक्षुषा समीक्षामहे ।।मजु 035/18

अर्थात् जिस प्रकार एक मित्र की दूसरे मित्र के प्रति गहरे प्रेमभाव की दृष्टि रहती है उसी प्रकार मैं भी प्रत्येक प्राणी को मित्रभाव से देखूँ।

यजुर्वेद के 40वें अध्याय में उत्युत्कृष्ट भाव वर्णित हैं - कि सभी प्राणियों में ईश्वर का वास है, इस उदस्तभावना से अनुप्राणित होकर सभी प्राणियों को अपने समान समझते हुए यह भावना रखनी चाहिए कि जब सभी एक हैं ईश्वर की सन्तान हैं तो वह किसी से मोह न करे और किसी से द्वेष न करे ?

यजु. 6/15 में भी कहा गया - 'यत्ते क्रूरं यदास्थितं तत्र आध्यायतां निष्टचायतां तत्ते शुध्यतु अर्थात् तुझमें जो ऐसी क्रूर पाशविक हिंसक वृत्तियां है जिससे प्राणियों की कष्ट प्राप्त होता है, जिससे उन्नति की भावनाएं नष्ट होती हैं वे अच्छी प्रकार निवृन्त हों।

वेद में पशु पक्षियों के दृष्टान्त के माध्यम से अपने दुर्व्भवसनों से दूर रहकर मानवीय मूल्यों की सुरक्षा का आदेश दिया है-

उलूकयातु शुशुलूकयातं जहि श्वयातुमुत कोकयातुम् ।

सुपर्णयातुमुत गृध्रयाातं हषदेव प्रमृण रक्ष इन्द्र।। ऋ 0 7/104/22

अर्थात् उल्लू के समान व्यवहार (मोहवृत्ति) छोड़ो, भेड़ियों की वृत्ति (क्रोधवृत्ति, क्रूरवृत्ति, अपहरणवृत्ति)

को छोड़ दो, कुत्ते की वृत्ति (चापलूसी तथा शत्रुता) को छोड़ दो, चकवा चकवी पक्षी की वृत्ति (रात्रि को अवारा बनकर घूमना) अर्थात् कोक का अर्थ मेढ़क भी है इस प्रकार मेढ़क की वृत्ति (अनियन्त्रित तथा अस्थिर रहने की वृत्ति) को छोड़ दो, गरुड़पक्षी की वृत्ति (अभिमान) को छोड़ दो। गृध् की चाल (लाभवृत्ति) को छोड़ दो।

अर्विवेद में कहा गया है हे प्रभो। चाहे मैं किसी को जानूं, चाहे न जानूं पर मैं सभी के प्रति सद्वुद्धि रखूँ । तद्यथा -

यांश्च पश्यामि यांश्च न तेषु ता सुमति कृधि । अथर्व. 17/17

सन्ध्योपासना के मनसापरिक्रमा के छह मन्त्रों में बारम्बार यहीं प्रार्थना है -

थोऽस्मान् द्वेष्टि वयं द्विष्मश्तं वो जम्भे दध्म: । अथर्व. 3.27

अर्थात् जो हमसे द्वेष करता है या हम जिससे द्वेष करते हैं उस द्वेष को हम आपकी न्यायव्यवस्था के अधीन करते हैं ।

ऋग्वेद में मानव के लिए सप्त मर्यादाओं का उल्लेख करतेहुए निर्देश दिया गया कि जो मनुष्य इनमें से एक भी मर्यादा का उल्लंघन करता है अर्थात् एक सी पाप करता है वह पापी होता है और जो धैर्यपूर्वक इन पापों को छोड़ देता है वह नि:सन्देह वह जीवन का आदर्श है। वे सात मर्यादाएं हैं - हिंसा, चोरी, व्यभिचार, मद्यपान, जुआ, असत्य भाषण तथा पापियों का साथ देना।

इन सात मर्यादाओं में एक मर्यादा असत्यभाषण की भी है।

मानवीय मूल्यों में 'सत्य' का स्थान जहां सर्वोपरि है वहीं इस पालन सबसे कठिन भी है। ऋग्वेद में स्पष्ट कहा गया - 'सत्येनोतभिता भूमि:' अर्थात् सत्य पर ही भूमि टिकी हुई है। सत्यं वृहत् ऋतुं.... मन्त्र में भी कहा गया कि छह तत्व प्रथिवी को धारण करते है उन छह गुणों में सर्वप्रथम स्थान सत्य का ही है। ऋग्वेद 10/37/2 में कहा है -

सा मा सत्योक्त: परिपातु विश्वतो च यत्र ततन्नहानि च।

विश्वमन्यन्निविशते यदेजसि विश्वाध्ययो विश्वाहोदेति सूर्य:।।

अर्थात् सत्य से आकाश अवलत्वित है। सम्पूर्ण संसार और समस्त प्राणी सत्य के आक्षित हैं। जिससे सूर्योदय हाता है, दिन प्रकाशित होता है तथा जल निरन्तर प्रवाहित होता है, वही सत्यवाणी मेरी रक्षा करे।

अन्य मन्त्रों में भी कहा गया -

सक्तुभिव तितरता पुनन्तो यत्र धीरा मनसा वाचमक्रत ।

अत्रा सखाय: सख्यानि जानते भद्रैषां लक्ष्मीनिर्दहिताधि वाचि।। ऋ0 10/17

अर्थात् जिस प्रकार छानी से सत्तू छाने जाते हैं उसी तरह जहाँ विद्वान लोग अपनी वाणी को मन से शुद्ध करके बोलते हैं वहीं पर लक्ष्मी और मित्रता ठहरती है।

अग्ने व्रतयते व्रतं चरिस्यामि तच्छकेयं तन्मे शच्छकेयं तन्मे राध्यताम्।

इदमहतनृतात् सत्यमुपैमि ।। यजु. - 1/15

अर्थात् हे अग्ने । मैं प्रतिज्ञा करता हूँ मै यथाशक्ति सत्य का पालन करूंगा अत: इस असत्य से निकलकर सत्य में आता हूँ ।

दृष्ट्वारूपे व्याकरोत् सत्यानृते प्रजापति:।

अश्रद्धामनृते दधाच्श्रदां सत्ये प्रजापति:।। यजु.-19/77

यदर्वाचीनं त्रैहायत्नादनृतं चिञ्चोदिम

आपोमा तस्मात्सर्वस्मात् दुरितात्पात्वं हस:। अथर्व.-10/5/55

सुविज्ञान चिकितुषे जनाय सच्चासच्च वचसीपसपृधाते
तयोर्थसत्यं यतर दृजीयस्तदित्सोमोऽवतिहन्त्यासत् । ऋ. 7/104/12

अर्थात् प्रजापति ने अच्छी प्रकार से देखकर सत्य और असत्य को अलग-अलग किया है। असत्य में अश्रद्धा तथा सत्य में श्रद्धा उत्पन्न की है। तीन वर्षो के इस पार जो हम झूठ बोलते हों तो हे ईश्वर। उन सब दुष्फल पापों से हमारी रक्षा कीजिए। मनुष्य की जागृति के लिए सत्य तथा असत्य के विज्ञान को एक दूसरे के विरूद्ध कहा है। इन दानों में जो सत्य ह वह सरलता और कोमलता लाता है, इसके विपरीत असत्य मनुष्य का सर्वनाश कर देता है।

वेद मानवमात्र के लिए शव के प्रति कल्याण भावना के समावेश का सन्देश देता है। सभी इन्द्रियाँ परोपकार तथा परहित में लगी रहें। सत्य के साथ-साथ निह्वा में माधुर्य भी हो। एक भी शब्द वाणी से न बोला जाए जिससे औरों को कष्ट पहुँचे। तद्यथा -

जिह्वाया अग्रे मधु में जिह्वामूले मधूलकम्।
ममेदहकता वसो मम चित्तमुपार्यास ।।
मधुमन्मे निक्रमणं मधुमन्मे परायणम् ।
वाचा वदामि मधुमत् भूयासं मधुसन्दृश:।। अर्थ-1/34/2-3

अर्थात् मेरी जिह्वा के अग्रभाग में मधुरता हो और जिह्वा के मूल में मधुरता हो। हे माधुर्य। मेरे कर्म में तेरा वास हो और मेरे मन के अन्दर भी तू पहुँच जा। मेरा गमन आगमन सब माधुर्य से भरा हो। वाणी से तो मैं मधुर व्यवहार करूँ पर मैं स्वयं भी मधुर बन जाऊ।

भद्रं कर्णेभि: श्रृणुयाम देवा: भद्रं पश्येमाक्षिभिर्यजत्रा:

स्थिरैरङ्गै.स्तुष्ट वांक्षसस्तनूभिर्व्यशेमहिं देवहितं यदायुः।। यजु. 25/21

अर्थात् हे देवो! हम सदैव श्रोत्र से कल्याणकारी शब्द ही सुन आँखों से कल्याणकारी दृश्य ही देखें। अपने दृढ़ अंगों से शरीर से वही कार्य करें जिसमें यावज्जीवन देवों का हित हो।

मनुष्य मनसा वाचा कर्मणा शुद्धपवित्र रहे। यूँ तो मानव कर्मेन्द्रियों से ही पाप करता है किन्तु इनका भी मूल मन है जो इन इन्द्रियों से विविध प्रकार की लीलायें करवा कर मनुष्य को पाप के गर्त में ठकेलता है अतः वेद में मन को शिवसंकल्पमय बनाने के लिए बारम्बार उपदेश किया गया है-

'मन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु'। और भी -
इदं यत् परमेष्ठिनं मनो वा ब्रह्मसंशितम्।
येनैव ससृजे घोरं तेनैव शान्तिरस्तु नः।। अथर्व - 19/9/3

अर्थात् मेरा जो मन परमेष्ठी है तथा जिसे ज्ञान से तीक्ष्ण बनाया जा सकता है, उससे प्रायः भयङ्कर पाप हो जाया करते हैं अतः हे ईश्वर! उसे शान्त रख ।

वाणी से भी घोर हो जाया करते हैं इसलिए वेद में कहा गया -
इयं या परमेष्ठिनी वाग्देवी ब्रह्मसंशिता ।
ययैव ससृजे घोरं तयैव शान्तिरस्तु नः। अथर्व- 19/9/4

अर्थात् मेरी यह वाणी भी परमेष्ठी हे तथा ज्ञान से यह तीक्ष्ण हो जाती है, इससे भङ्क.र पाप हो जाते है, अतः हे ईश्वर! हमें शान्त बनाये रखें ।

और भी -
इयानि यानि पञ्चेन्द्रियाणिमनः षष्ठानि मेहृदि ब्रह्मणा संशितानि।
यैरेव ससृजे घोरं तैरेव शान्तिरस्तु नः। अथर्व. 19/9/5

अर्थात् हम से ज्ञानेन्द्रियों तथा छठा मन जिसे ज्ञान से तीक्ष्ण बनाया जा सकता है उससे घोर पाप हो जाया करते हैं। हे ईश्वर! मेरे मन तथा इन्द्रियों को शुद्धपवित्र कीजिए ।

वेद में चौर्यकर्म की निन्दा की गई है -
येऽमावस्यां रात्रिमुदस्थुः व्रातमत्रिणः।
अग्निस्तुरीयोयातुहा सोऽस्मभ्यमधि ब्रवत्।। अथर्व. 1/16/1

अर्थात् जो लोग डान्होरी अमास्या की रात्रियों में चोरी या डाका डालते हैं। उनसे बचने के लिए राजपुरूष सबको सचेत करता है और उन्हें पकड़कर सबको मार डालता है। इसलिए कभी किसीको चोरी नहीं करनी चाहिए ।

आजमानव न अनेक वैज्ञानिक उपलब्धियां प्राप्त कर ली हैं। उसने सुदूरस्थित भास्कर चन्द्र नक्षण तारक सबकी ऊँचाइयों तथा पृथिवी की गहराइयों की भी प्रविष्टियाँ प्राप्त कर ली किन्तु सर्वाधिक समीपस्थ

हृदय के भीतर गहरा सन्नाटा है। रक्तजन्य सम्बन्धों में भी माधुर्य तथा आत्मीयत्व समाप्त है। वेद में उत्तमोत्तम उपमानों के माध्यम से परस्पर प्रीतिपूर्वक रहने का सन्देश है-

सहृदयं साम्मनस्यमविविद्वेषं कृणोमिवः ।
अन्योऽन्यमभिहृयेत वत्यं जातमिवाध्न्या।।
अनुव्रतः पितुः पुत्रो मात्रा भवतु सम्मनाः।
जायापत्ये मधुमती वाचं वदतु शान्तिवाम्।।
मा भ्राता भ्रातरं द्विक्षन् मा स्वसारमुत स्वसा।
सम्यञ्चः सव्रता भूत्वा वाचं वदत भद्रया।। अथर्व. 3/30/1, 2, 3

अर्थात् हे मनुष्यों! मैं तुम सबको एक हृदयवाला, एक मन वाला तथा द्वेष रहित करता हूँ। तुम एक दूसरे के साथ उसी प्रकार स्नेह करो जैसे गाय अपने रद्योजात-बछड़े को प्यार करती है। पुत्र अपने पिता के अनुकूल और माता के साथ समान मन वाला हो। पत्नी अपने पिता से मधुर सम्बन्ध बनाए रखें एवं उसके प्रति द्वेष न करे।

अथर्व 3/30/8 में बताया गया है कि जिस प्रकार जल व अग्नि दोनों परस्पर विरुद्ध गुण धर्म वाले कभी एक दूसरे पर आक्रमण नहीं करते, सूर्य परस्पर विराधी गुणवाले होते हुए भी परस्पर नहीं टकराते उसी प्रकार पृथक् विचार के होते हुए भी ऐ मनुष्यों। तुम परस्पर प्रेमभाव से रहा। तद्यथा -

येन देवा न वियन्ति नो च विद्विषते मिथः।
तत्कृष्मो ब्रह्म वो गृहे संज्ञानं पुरुषभ्यः।।

अर्थात् जब देव परस्पर विरोधी नहीं बनते, दूसरे से द्वेष नहीं करते, इस प्रकार हे मनुष्यों। विद्वज्जनों के उपदेश का श्रवण कर तुम भी घर परिवार में शान्ति से रहा।

सूर्य तथा चन्द्रमा की उपमा देते हुए ऋग्वेद के अन्यमन्त्र में भी कहा-
स्वस्ति पन्थामनुचरेम सूर्याच्द्रमसावित।
पुनर्ददताध्नता जानता संगमेमहि ।। ऋ. 5/51/15

अर्थात् हम मानव सूर्य तथा चन्द्रमा की भान्ति सदा कल्याण के मार्ग पर चलें और इन्हीं की तरह किसी की हिंसा न करें सदा सबको देते रहे ।

डॉ. प्रतिभा
स.प्रो. संस्कृत विभाग,
जम्मू विश्वविद्यालय, जम्मू

30 नवम्बर 2016 को नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, जम्मू की अर्द्धवार्षिक बैठक की गतिविधियाँ

ISSN 2320-2998

CSIR-IIIM

सीएसआईआर- भारतीय समवेत औषध संस्थान, जम्मू

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, जम्मू

Jandiyal Printing Press # 2553140